

हिन्दी भाषा एवं शिक्षण (परीक्षा प्वाइंटर)

1. हिन्दी का उद्भव और विकास

- 'कुटज' के रचनाकार हैं- **हजारी प्रसाद द्विवेदी**
- 'पूस की रात' के रचनाकार हैं- **प्रेमचंद**
- 'ध्रुवस्वामिनी नाटक' के रचनाकार हैं- **जयशंकर प्रसाद**
- 'संस्कृति के चार अध्याय' के रचनाकार हैं- **दिनकर**
- 'ग्यारह वर्ष का समय' के लेखक हैं- **रामचन्द्र शुक्ल**
- दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना, राम नाम का मरम है आना, पंक्ति हैं- **कबीर**
- 'संतन कहा सीकरी सौ काम' पंक्ति हैं- **कुंभनदास**
- 'पुष्टिमार्ग को जहाज जात है सो जाको कछु लेना होय सो लेउ' पंक्ति हैं- **विठ्ठलनाथ**
- 'गोद लिए तुलसी फिरै, तुलसी सो सुत होय।' इस पंक्ति के रचनाकार हैं- **रहीमदास**
- 'मगहर' स्थान का सम्बन्ध हैं- **कबीरदास**
- कबीर की रचनाओं का संकलन किया था- **धर्मदास**
- सूरदास की कौन-सी रचना उनकी प्रसिद्धि का मूल आधार हैं- **सूरसागर**
- 'पृथ्वीराज रासो' किस काल की रचना हैं- **आदिकाल**
- 'संदेश रासक' के रचयिता हैं- **अब्दुर्रहमान**
- 'केशव कहि न जाइ का कहिए'-यह पंक्ति हैं- **तुलसीदास**
- बिहारी किस काल के कवि थे- **रीतिकाल**
- 'आनन्द कादम्बिनी' के सम्पादक थे- **बदरीनारायण चौधरी**
- 'एक भारतीय आत्मा' के नाम से लोकप्रिय हैं- **माखनलाल चतुर्वेदी**
- गाँधी जी ने 'राष्ट्रकवि' की उपाधि किसे दी- **मैथिलीशरण गुप्त**
- हिन्दी किस लिपि में लिखी जाती हैं- **देवनागरी**
- आधुनिक हिन्दी साहित्य की पहली आत्मकथा के लेखक माने जाते हैं- **श्यामसुन्दर दास**
- 'कवियों का कवि' कहा जाता हैं- **शमशेर बहादुर सिंह**

- 'अति सूधो सनेह को मारग हैं' पंक्ति हैं- **घनानन्द**
- महावीर प्रसाद द्विवेदी ने आदिकाल को क्या संज्ञा दी हैं- **बीजवपनकाल**
- 'अमिय हलाहल मयभरे, सेत, स्याम रतनार। जियत मरत, झुकि-झुकि परत जेहि चितवत एक बार।' - **रसलीन**
- 'हिन्दी नयी चाल में ढली' कथन हैं- **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**
- 'हम दीवानों की क्या हस्ती है आज यहाँ कल वहाँ चले' किसकी पंक्तियाँ हैं- **भगवतीचरण वर्मा**
- छायावादी प्रवृत्ति की रचना सबसे पहले दिखलायी पड़ी- **मुकुटधर पाण्डेय की रचनाओं**
- एक-दूसरे से भिन्न-भिन्न, नये-नये विचारों एवं रचना शैलियों के जो सात कवि प्रयोगवाद के कवि के रूप में प्रसिद्ध हुए, उनकी कविताओं के संग्रह का सही नाम था- **तार सप्तक**
- 'द्विवेदी युग' नामकरण किया गया हैं- **महावीर प्रसाद द्विवेदी के नाम**
- लोकमंगल की भावना का सर्वश्रेष्ठ कवि हैं- **गोस्वामी तुलसीदास**
- 'आधे-अधूरे' नाटक के रचनाकार हैं- **मोहन राकेश**
- 'भूषण' किस काल के कवि हैं- **रीतिकाल**
- विनय पत्रिका की भाषा हैं- **ब्रज भाषा**
- आदिकाल में पहेलियाँ लिखने वाले कवि थे- **खुसरो**
- 'दुल्हन गावहु मंगलाचार मोरे घर आये राजा राम भरतार।' ये पंक्तियाँ हैं- **कबीरदास**
- आदिकाल के लिए 'वीरगाथाकाल' नाम दिये हैं- **आचार्य रामचन्द्र शुक्ल**
- 'बुन्देले हरखोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी। खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी।' प्रस्तुत पंक्तियों के रचयिता हैं- **सुभद्राकुमारी चौहान**
- हिन्दी दिवस मनाया जाता हैं- **14 सितम्बर**

- घनानन्द को किस युग का कवि माना जाता है- **रीतिकाल**
- सच्चिदानन्द हीरानन्द वात्स्यायन का उपनाम है- **अज्ञेय**
- 'विहारी' के प्रसिद्ध हैं- **दोहा**
- 'सूरदास' ने किस भाषा में 'सूरसागर' की रचना की- **ब्रज**
- 'यामा' किसकी रचना है- **महादेवी वर्मा**
- 'रामचरितमानस' में कांड का सही क्रम है-

बालकांड, अयोध्याकांड, सुंदरकांड, लंकाकांड

- 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाही'-किस रचनाकार की पंक्ति है- **तुलसीदास**
- अमृतलाल नागर के किस उपन्यास में गोस्वामी तुलसीदास की जीवनी को आधार बनाया गया है- **मानस का हंस**
- डॉ. नागेन्द्र ने किस युग को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा है- **छायावाद**
- 'भेजे मनभावन के ऊधव के आवन की सुधि ब्रज-गाँवनि में पावन जबै लगी'-इस पंक्ति के रचनाकार हैं-

जगन्नाथ दास 'रत्नाकार'

- कौन-सा महीना 'भाद्रपद' महीने के बाद आता है- **अश्विन**
- 'सावधान मनुष्य! यदि विज्ञान है तलवार, तो इसे दे फेंक, तजकर मोह स्मृति के पार' पंक्तियों के रचयिता हैं- **दिनकर**
- प्रथम 'तारसप्तक' का प्रकाशन वर्ष है- **1943**
- 'तोड़ने ही होंगे मट और गढ़ सब'-किसकी पंक्ति है-

मुक्तिबोध

- हिन्दी का कौन-सा प्रेमाख्यान कवि एक आँख का काना था?

जायसी

- 'वह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर'
उपरोक्त पंक्तियाँ हैं- **सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'**
- ज्ञानपीठ पुरस्कार किस क्षेत्र में श्रेष्ठ कार्य करने पर दिया जाता है- **साहित्य**
- हिन्दी का पहला पत्र है- **उदंत मार्तण्ड**
- 'प्रेमसागर' किसकी रचना है- **लल्लू लाल जी**
- 'चिन्तामणि' किसका निबन्ध संग्रह है- **रामचन्द्र शुक्ल**
- 'आवारा मसीहा' जीवनी में किसका जीवनचरित्र है-

शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

- 'पिता' कहानी के लेखक हैं- **ज्ञानरंजन**
- 'अन्या से अनन्या' किसकी रचना है- **प्रभा खेतान**
- 'अपने-अपने पिंजरे' आत्मकथा है- **मोहनदास नैमिशराय**
- 'इदन्नमम्' रचना किसकी है- **मैत्रेयी पुष्पा**

- बालकृष्ण भट्ट के उपन्यास का नाम है-

सौ अजान और एक सुजान

- 'चन्दायन' के रचयिता हैं- **मुल्ला दाउद**
- 'आचरण की सम्यता' किसका निबन्ध है- **सरदार पूर्ण सिंह**
- 'कवितावली' के रचनाकार हैं- **तुलसीदास**
- 'अन्धेर-नगरी' के लेखक हैं- **भारतेन्दु हरिश्चन्द्र**
- 'हिन्दी-प्रदीप' पत्रिका का सम्पादन किया है-

बालकृष्ण भट्ट

- 'परमाल रामो' किसके द्वारा रचित है- **जगनिक**
- 'मृगावती' किसकी रचना है- **कुतुबन**
- 'तदीय समाज' की स्थापना की थी- **भारतेन्दु**
- 'बीजक' रचना है- **कबीर**
- 'त्याग-पत्र' उपन्यास के उपन्यासकार हैं- **जैनेन्द्र**
- हिन्दी साहित्य के इतिहास के सम्बन्ध में 'द मॉडर्न वर्नाक्युलर लिटरेचर ऑफ हिन्दोस्तान' किसने लिखा है-

जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन

- 'हिन्दी प्रदीप' पत्रिका का सम्बन्ध है- **इलाहाबाद**
- सरस्वती पत्रिका के सम्पादक कौन थे- **महावीर प्रसाद द्विवेदी**
- 'मेरी तिब्बत-यात्रा' के रचनाकार हैं- **राहुल सांकृत्यायन**
- 'मधुलिका' जयशंकर प्रसाद की किस कहानी की पात्र है-

पुरस्कार

2.

भाषा तथा व्याकरण

- मूर्धन्य व्यंजन है- **ट, ठ, ड, ढ**
- समूहवाचक संज्ञा है- **कक्षा**
- परिमाणवाचक विशेषण है- **पाँच किलो**
- 'आलस्य' शब्द का विशेषण है- **आलसी**
- सर्वनाम के कितने प्रकार हैं- **छः**
- 'बाल' का स्त्रीलिंग है- **बाला**
- 'कवयित्री' का पुल्लिंग है- **कवि**
- 'साधु' का स्त्रीलिंग है- **साध्वी**
- 'परिश्रमी' शब्द का विशेषण है- **गुणवाचक विशेषण**
- 'मानव' शब्द के भाववाचक संज्ञा है- **मानवता**
- हिन्दी भाषा में वे ध्वनियाँ कौन-सी हैं जो स्वतन्त्र रूप से बोली या लिखी जाती हैं- **स्वर**
- हिन्दी में वचन होते हैं- **दो**
- जिन शब्दों में प्रयोग के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता है उन्हें कहा जाता है- **अविकारी शब्द**



■ जातिवाचक संज्ञा है-	पुस्तक	■ 'पीना' क्रिया है-	सकर्मक
■ 'वह स्वतः ही जान जायेगा' में 'वह' सर्वनाम है-	निजवाचक सर्वनाम	■ हिन्दी शब्दकोश के अनुसार संतान, सकल, सचल, सक्षम शब्दों का सही क्रम है-	संतान, सकल, सक्षम, सचल
■ तालव्य व्यंजन है-	च, छ, ज, झ	■ 'पापी' में कौन-सा विशेषण है-	गुणवाचक विशेषण
■ शब्द के जिस रूप से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं आदि का बोध हो, उसे कहते हैं-	बहुवचन	■ वर्णों के इस समूह को, जिससे कोई निश्चित अर्थ निकलता हो, कहा जाता है-	शब्द
■ प्रश्नवाचक सर्वनाम होते हैं-	कौन, किसे, कब	■ 'वह थोड़ा बीमार है'-इस वाक्य में 'थोड़ा' में कौन-सा क्रियाविश्लेषण है-	परिमाणवाचक क्रियाविश्लेषण
■ जहाँ एक क्रिया के समाप्त होने के तुरन्त बाद दूसरी पूर्ण क्रिया के होने का बोध होता है, (जैसे-दिनेश पढ़कर सोया) वहाँ पहली क्रिया को कहते हैं-	पूर्वकालिक क्रिया	■ 'कलरव' शब्द है-	अमात्रिक
■ एक पद, वाक्यांश या उपवाक्य का सम्बन्ध दूसरे पर वाक्यांश या उपवाक्य में जोड़ने वाले अव्यय को कहते हैं-	समुच्चयबोधक अव्यय	■ 'बुढ़ापा' शब्द में कौन-सी संज्ञा है-	भाववाचक संज्ञा
■ किन ध्वनियों को 'अनुस्वार' कहा जाता है-	स्वर के बाद में आने वाली नासिक्य ध्वनियाँ	■ 'पण्डित' से बनी भाववाचक संज्ञा है-	पाण्डित्य
■ 'भाववाचक संज्ञा' के अन्तर्गत आते हैं-	गुण-दोष आदि	■ 'हँसना' कैसी क्रिया है-	अकर्मक क्रिया
■ 'मदन काली पतलून पहन कर खेलने आया' में विशेषण है-	काली	■ मुख्य क्रिया के अर्थ को स्पष्ट करने वाली क्रिया होती है-	सहायक क्रिया
■ 'पुस्तक' का विशेषण बनेगा-	पुस्तकीय	■ 'बाजार' से किस संज्ञा का बोध होता है-	जातिवाचक
■ 'यह नयी साड़ी है' वाक्य में 'नयी' शब्द है-	विशेषण	■ 'थ' किस वर्ग का व्यंजन है-	दन्त्य
■ 'श्याम धीरे-धीरे चलता है', वाक्य में 'धीरे-धीरे' शब्द है-	क्रिया-विशेषण	■ 'जहाँ-जहाँ' शब्द व्याकरण की दृष्टि से है-	शब्द-युग्म
■ "बच्चे बहुत-सी गलतियाँ मात्राओं के प्रयोग में करते हैं" इस वाक्य में रेखांकित अंश है-	अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण	■ 'गीता मन्द-मन्द मुस्कुरा रही है' इस वाक्य में 'मन्द-मन्द' व्याकरण की दृष्टि से है-	क्रिया-विशेषण
■ गुणवाचक, परिमाणबोधक, सार्वनामिक, संख्यावाचक-ये सभी किसके भेद हैं-	विशेषण	■ विल्ली छत से कूद पड़ी कौन-सा कारक है-	अपादन कारक
■ कबीर कल सुन्दर दिख रहा था।		■ 'पानी' शब्द का लिंग है-	पुल्लिंग
उपरोक्त वाक्य में रेखांकित शब्द व्याकरण की दृष्टि से है-	विशेषण	■ 'लोगों ने शोरगुल करके डाकुओं को भगाया', वाक्य में कारक है-	कर्म कारक
■ 'पशुता' शब्द उदाहरण है-	भाववाचक संज्ञा	■ 'लड़का पेड़ से गिरा' वाक्य में कारक है-	अपादान कारक
■ व्युत्पत्ति के आधार पर संज्ञा के कितने भेद होते हैं-	पाँच	■ 'पुस्तक' शब्द में लिंग है-	स्त्रीलिंग
■ 'घ' का उच्चारण स्थान है-	कण्ठ	■ 'छात्र' का बहुवचन है-	छात्रों
■ 'क्ष' वर्ण योग से बना है-	क् + ष	■ 'हरिण' का स्त्रीलिंग है-	हरिणी
■ हिन्दी शब्दकोश में पहले आने वाला शब्द है-	वक्त	■ हिन्दी के शब्दों का लिंग निर्धारण किसके आधार पर होता है-	क्रिया
■ हिन्दी शब्दकोश में अ किस वर्ण से पहले आता है-	अः	■ कारक के भेद होते हैं-	आठ
■ 'ज्ञ' को वर्णमाला में माना जाता है-	संयुक्त व्यंजन	■ 'पंडित दूध पीता है- कारक है	कर्ता, कर्म
■ 'कवि' शब्द में संज्ञा है-	जातिवाचक	■ पेड़ से बन्दर कूदा' वाक्य में कौन-सा कारक है-	अपादान कारक
		■ 'वीर' का स्त्रीलिंग है-	वीरांगना
		■ 'को' से किस कारक चिह्न का बोध होता है-	कर्म कारक
		■ 'दाता' शब्द का स्त्रीलिंग शब्द है-	दात्री
		■ 'हे राम! तुम कहाँ हो' वाक्य में कौन-सा कारक है-	सम्बोधन



- सदैव बहुचन में प्रयुक्त होने वाला शब्द है- **हस्ताक्षर**
- 'कर्म कारक' का चिह्न है- **को**
- 'प्यास' शब्द का वर्ण-विच्छेद है- **प् + य् + आ + स् + अ**
- संयुक्त क्रिया का उदाहरण वाला वाक्य है-
तुम प्रतिदिन पढ़ने आया करो
- 'किसान खेत के सूखे पेड़ कटवा चुका है।' में क्रिया है-
प्रेरणार्थक
- 'हमें सफलता मिलने तक प्रयास करना चाहिए' इस वाक्य में 'तक' है-
सम्बन्धबोधक अव्यय
- 'को' और 'के लिए' किस कारक के चिह्न हैं- **सम्प्रदान कारक**
- 'अहा! आप आ गये' वाक्य में 'अहा' शब्द है- **अव्यय**
- 'महात्मा गांधी में अमूल्य गुण थे' इस वाक्य में 'अमूल्य' शब्द है-
विशेषण
- 'हवा धीरे-धीरे बह रही है।' इस वाक्य में विशेषण है-
क्रिया-विशेषण
- 'मेरी गाय काली है।' इस वाक्य में रेखांकित शब्द है- **विशेषण**
- 'तृ' की ध्वनि है- **त् + त्रह + अ**

3. भाषा व लिपि

- हिन्दी भाषा की लिपि है- **देवनागरी**
- फारसी लिपि लिखी जाती है- **दाएँ से बाएँ**
- पंजाबी किस लिपि में लिखी जाती है- **गुरुमुखी**
- सर्वप्रथम भाषा का प्रयोग किस रूप में हुआ- **मौखिक**
- भाषा के लिखने का ढंग है- **लिपि**
- भाषा साधन है- **अभिव्यक्ति का**
- भाषा संरचना में अपेक्षित भाषा के प्रमुख अंग होते हैं- **2**
- भाषा का प्राथमिक रूप है- **मौखिक**
- देवनागरी लिपि का विकास हुआ है- **ब्रह्मी**

4. वर्ण – विचार

- क्ष, त्र, ज्ञ, श्र वर्ण है- **संयुक्त व्यंजन**
- अयोगवाह किसे कहा गया है- **अं, अः**
- फ, ब किस प्रकार के वर्ण हैं- **ओष्ठ्य**
- ध्वनि किसकी लघुतम इकाई है- **भाषा**
- लघुतम वाग् – ध्वनि को कहते हैं- **वर्ण**
- वर्णमाला में मात्रा का अर्थ है-
वर्ण के उच्चारण में लगने वाला समय

- बिना अवरोध के उच्चारित होने वाले वर्ण कहलाते हैं- **स्वर**
- व्यंजन की परिभाषा है-
स्वर की सहायता से बोले जाने वाले वर्ण
- उच्चारण स्थान की दृष्टि से 'क-वर्ण' के सभी वर्ण कहलाते हैं-
कंठ्य
- 'च, छ, ज, झ, ञ' ध्वनियाँ कहलाती हैं- **तालव्य**
- 'क, ग' वर्ण है- **अल्पप्राण वर्ण**
- वर्णमाला में कुल व्यंजनों की संख्या होती है- **33**
- 'ह' वर्ण है- **घोष वर्ण**
- 'ख, घ' वर्ण है- **महाप्राण**
- भाषा की सबसे छोटी इकाई है- **वर्ण**
- वर्ण स्पर्श संघर्षी है- **झ**

5. संधि

- 'इत्यादि' का सन्धि-विच्छेद है- **इति + आदि**
- 'परिच्छेद' का सन्धि विच्छेद है- **परि + छेद**
- 'महर्षि' का सन्धि विच्छेद है- **महा + ऋषि**
- 'राकेश' का सही सन्धि-विच्छेद है- **राका + ईश**
- 'दिगम्बर' का सही सन्धि-विच्छेद है- **दिक् + अम्बर**
- 'ब्रह्मास्त्र' का सही सन्धि-विच्छेद है- **ब्रह्मा + अस्त्र**
- 'गिरिश' का सन्धि-विच्छेद है- **गिरि + ईश**
- स्वर सन्धि के कुल कितने भेद हैं- **पाँच**
- 'अन्वय' का सन्धि विच्छेद है- **अनु + अय**
- 'अन्वेषण' का सन्धि-विच्छेद होगा- **अनु + एषण**
- 'विद्यालय' शब्द में संधि है- **स्वर सन्धि**
- 'पवन' शब्द का सन्धि-विच्छेद होगा- **पो + अन**
- 'उच्चारण' का सन्धि-विच्छेद है- **उत् + चारण**
- 'भारतेन्दु' शब्द में संधि है- **गुण सन्धि**
- 'वृक्षच्छाया' का सन्धि-विच्छेद होगा- **वृक्ष + छाया**
- महा + उदय = का संधि है- **महोदय**
- 'सद्भावना' का सन्धि-विच्छेद है- **सत् + भावना**
- 'मनोरथ' का सन्धि-विच्छेद होगा- **मनः + रथ**
- 'विद्यार्थी' उदाहरण है- **दीर्घ स्वर सन्धि का**
- 'जगन्नाथ' किस सन्धि का उदाहरण है- **व्यंजन सन्धि**
- 'भानूदय' शब्द का सन्धि-विच्छेद क्या होगा- **भानु + उदय**
- 'निर्गुण' का सन्धि-विच्छेद होगा- **निः + गुण**
- 'प्रत्येक' का सन्धि-विच्छेद क्या है- **प्रति + एक**



- 'पुनर्जन्म' का सन्धि-विच्छेद है-
- 'इत्यादि' शब्द में कौन-सी सन्धि है-
- 'सूर्योदय' शब्द का सन्धि-विच्छेद है-
- 'अक्षीहिणी' का सन्धि-विच्छेद है-
- 'यशः + दा' का सन्धि युक्त पद होगा-
- 'हृषीकेश' का सन्धि विच्छेद है-
- 'तथैव' शब्द का सन्धि-विच्छेद है-
- 'लघूर्मि' में कौन-सी सन्धि है-
- 'रीत्यनुसार' का सन्धि-विच्छेद है-
- 'तल्लीन' शब्द में कौन-सी सन्धि है-
- 'निष्ठुर' का सन्धि विच्छेद है-
- 'परमार्थः' का सन्धि विच्छेद है-
- 'साक्षर' का सन्धि विच्छेद है-
- 'शुभारम्भ' में सन्धि है-
- 'राजर्षि' का सन्धि विच्छेद है-

पुनः + जन्म
यण् सन्धि
सूर्य + उदय
अक्ष + ऊहिनी
यशोदा
हृषीक + ईश
तथा + एव
दीर्घ स्वर सन्धि
रीति + अनुसार
व्यंजन संधि
निः + ठुर
परम + अर्थः
स + अक्षर
दीर्घ सन्धि
राज + ऋषि

- जिसमें पहला पद संख्यावाचक हो और जो किसी समूह विशेष का बोध कराये उसे कहते हैं- **द्विगु समास**
- द्वन्द्व समास है- **नर-नारी**
- जिसका पहला पद विशेषण और दूसरा पद विशेष्य हो उसे कहते हैं- **कर्मधारय समास**
- द्विगु समास का उदाहरण है- **नवग्रह**
- 'चौराहा' शब्द में कौन-सा समास है- **द्विगु**
- 'लिखने-पढ़ने' में कौन-सा समास है- **द्वन्द्व**
- 'अष्टाध्यायी' समास है- **द्विगु**
- 'जनतन्त्र' शब्द किस समास-प्रकार के अन्तर्गत है-

सम्बन्ध तत्पुरुष समास

- 'पंजाब' शब्द में समास है- **बहुव्रीहि**
- यथाशक्ति में समास है- **अव्ययीभाव**
- 'रघुपति' शब्द किस समास का उदाहरण है- **बहुव्रीहि**
- स्त्रीपुरुष में प्रयुक्त समास है- **द्वन्द्व**
- 'द्विगु समास' का उदाहरण है- **त्रिभुवन**
- 'उपकूल' में कौन-सा समास है- **अव्ययीभाव**
- 'पतझड़' में समास है- **बहुव्रीहि**
- प्राणप्रिय में कौन-सा समास है- **कर्मधारय**
- 'अनुरूप' समस्त पद में कौन-सा समास है- **अव्ययीभाव**
- 'देशान्तर' में कौन-सा समास है- **तत्पुरुष**
- 'गगनचुम्बी' में कौन-सा समास है- **तत्पुरुष (कर्म तत्पुरुष)**
- 'शताब्दी' शब्द में समास है- **द्विगु**
- अव्ययी भाव समास का उदाहरण है- **यथाशीघ्र**
- 'बहुव्रीहि' समास का उदाहरण है- **गिरिधर**
- द्वन्द्व समास का उदाहरण है- **छल-कपट**
- 'ऋणमुक्त' समस्त पद का विग्रह है- **ऋण से मुक्त**
- विशेषण और संज्ञा के संबंध वाले शब्द में कौन-सा समास होता है- **कर्मधारय**
- रसोईधर में कौन-सा समास है- **तत्पुरुष**
- प्रतिदिन में कौन-सा समास है- **अव्ययीभाव**
- राम-लक्ष्मण में समास बताइए- **द्वंद्व**
- चंद्रशेखर में कौन-सा समास है- **बहुव्रीहि**
- हानि-लाभ में कौन-सा समास है- **द्वंद्व**
- किस समास में अन्तिम पद प्रधान होता है- **तत्पुरुष**
- 'गुणहीन' में समास है- **तत्पुरुष**
- 'आकण्ठ' में समास है- **अव्ययीभाव**

6. समास

- समास का शाब्दिक अर्थ है- **संक्षेप**
- 'मृगनयनी' में कौन-सा समास है- **कर्मधारय**
- 'नवरत्न' शब्द में कौन-सा समास है- **द्विगु**
- 'लम्बोदर' में कौन-सा समास है- **बहुव्रीहि**
- 'परमेश्वर' में कौन-सा समास है- **कर्मधारय**
- द्विगु समास का उदाहरण है- **त्रिभुवन**
- 'कन्यादान' में कौन-सा समास है- **तत्पुरुष**
- दो अथवा दो से अधिक शब्दों से मिलकर बने हुये नये सार्थक शब्द को कहते हैं- **समास**
- 'पंचवटी' में कौन-सा समास है- **द्विगु**
- 'चतुर्भुज' में कौन-सा समास है- **बहुव्रीहि**
- 'वनवास' में कौन-सा समास है- **तत्पुरुष**
- विशेषण और विशेष्य को योग में कौन-सा समास बनता है- **कर्मधारय**
- 'देशरक्षा' शब्द किस समास का उदाहरण है- **तत्पुरुष**
- 'दोराहा' शब्द किस समास का उदाहरण है- **द्विगु**
- 'कमलनयन' शब्द में कौन-सा समास है- **कर्मधारय**
- अव्ययीभाव समास का उदाहरण है- **आमरण**
- जब किसी समास में दोनों शब्द प्रधान हों तो उसको कहते हैं- **द्वन्द्व समास**



■ 'श्याम सुंदर' में समास है—	अव्ययीभाव
■ 'यथाशक्ति' का समास है—	अव्ययीभाव समास
■ 'तुलसीकृत' का समास है—	तत्पुरुष
■ 'चौराहा' वाक्य में समास है—	द्विगु समास
■ जब दो या दो से अधिक पद मिलकर एक नवीन पद की रचना करते हैं, तो उसे कहते हैं—	समास
■ किस समास के दोनों शब्दों को समानाधिकरण होने पर कर्मधारय समास होता है—	तत्पुरुष
■ 'अमृतधारा' शब्द में समास है—	अमृत की धारा
■ 'घर-आँगन' में समास है—	तत्पुरुष
■ 'जन्मांध' शब्द में समास है—	तत्पुरुष
■ 'देवासुर' में समास है—	द्वंद्व
■ 'पंचांग' शब्द में समास है—	द्विगु
■ जिस समास के दोनों पद अप्रधान होते हैं, वहाँ पर कौन-सा समास होता है—	बहुव्रीहि
■ 'शरणागत' शब्द में कौन-सा समास है—	तत्पुरुष
■ 'नीलोत्पलम्' शब्द में कौन-सा समास है—	कर्मधारय समास
■ 'जितेन्द्रिय' शब्द में कौन-सा समास है—	बहुव्रीहि
■ 'पंचानन' शब्द में कौन-सा समास है—	बहुव्रीहि
■ 'देशांतर' शब्द में कौन-सा समास है—	बहुव्रीहि
■ 'अष्टाध्यायी' शब्द में कौन-सा समास है—	द्विगु
■ 'ऋणमुक्त' समस्त पद का विग्रह है—	ऋण से मुक्त
■ 'रघुपति' शब्द में कौन-सा समास है—	बहुव्रीहि
■ स्त्री-पुरुष में प्रयुक्त समास है—	द्वंद्व
■ 'अनुचित' शब्द में समास है—	अव्ययीभाव
■ 'गुरुमुखी' पद में समास होगा—	बहुव्रीहि
■ 'देशभक्ति' में कौन-सा समास है—	तत्पुरुष समास
■ 'कष्टसाध्य' में कौन-सा समास है—	तत्पुरुष
■ 'राष्ट्रभक्ति' में प्रयुक्त समास है—	सम्बन्ध तत्पुरुष
■ 'उपकुल' में कौन-सा समास है—	अव्ययीभाव
■ 'चौराहा' शब्द में कौन-सा समास है—	द्विगु
■ 'पंजाब' शब्द में समास है—	बहुव्रीहि समास
■ 'माता-पिता' में समास है—	द्वंद्व
■ 'चंद्रचूड़' शब्द में समास है—	कर्मधारय
■ 'विभुवन' शब्द में समास है—	द्विगु समास
■ 'स्त्री-पुरुष' शब्द में समास है—	द्वंद्व

7. तत्सम एवं तद्भव शब्द

■ 'क्षीण' का तद्भव रूप है—	छीन
■ 'साखी' का तत्सम रूप है—	साक्षी
■ 'किवाड़' का तत्सम रूप है—	कपाट
■ एक तत्सम तथा एक तद्भव शब्द का जोड़ा है—	पुच्छ-पूँछ
■ 'स्वर्णकार' का तद्भव रूप है—	सुनार
■ 'कर्म' का तद्भव रूप है—	करम
■ हिन्दी के तत्सम शब्द वे हैं, जो—	संस्कृत से ज्यों के त्यों लिये गये हैं
■ 'कुम्हार' का तत्सम शब्द है—	कुम्भकार
■ 'आम' का तत्सम शब्द है—	आम्र
■ 'कदम' का तत्सम रूप है—	कदम्ब
■ 'इक्षु' का तद्भव शब्द है—	ईख
■ 'आराम' शब्द है—	अरबी
■ संस्कृत के शब्द जो हिन्दी में ज्यों के त्यों प्रयुक्त होते हैं, कहलाते हैं—	तत्सम शब्द
■ 'कृपण' शब्द है—	तत्सम
■ 'वणिक' का तद्भव रूप है—	बनिया
■ 'कूची' का तत्सम रूप है—	कूर्चिका
■ 'उजला' का तत्सम रूप है—	उज्ज्वल
■ 'पुराण' का तत्सम रूप है—	पुराण
■ 'अट्टालिका' का तद्भव है—	अटारी
■ 'रोगी' का तत्सम रूप है—	रुग्ण
■ संस्कृत के वे शब्द जो हिन्दी में बिना किसी परिवर्तन के प्रयुक्त होते हैं, कहलाते हैं—	तत्सम
■ 'श्वसुर' शब्द का तद्भव रूप होगा—	ससुर
■ 'धरित्री' का तद्भव रूप है—	धरती
■ 'मोर' का तत्सम शब्द होगा—	मयूर
■ 'स्वर्ण' शब्द है—	तत्सम
■ 'भँवरा', 'मछली' शब्द है—	तद्भव
■ 'मुदरी' का तत्सम रूप है—	मुद्रिका
■ 'अखिल' शब्द है—	तत्सम
■ 'कपूर' शब्द है—	तद्भव
■ किस समूह के सभी शब्द यौगिक हैं—	रसोईघर, अनपढ़, पुस्तकालय, राजमहल
■ योगरूढ़ शब्द है—	चक्रपाणि



- 'घुड़सवार' शब्द है- यौगिक शब्द
- 'अजायबघर' है- संकर शब्द
- वे शब्द जो प्रकृति प्रत्यय अथवा दूसरे शब्दों के योग से बने हों, कहलाते हैं- यौगिक

8. उपसर्ग/प्रत्यय

- 'मिलावट' में प्रयुक्त प्रत्यय है- आवट
- 'इक' प्रत्यय जोड़कर बनाया गया शब्द है- दैनिक
- 'पराधीन' में प्रयुक्त उपसर्ग और मूल शब्द है- पर + आधीन
- 'अध्यक्ष' शब्द में उपसर्ग है- अधि
- 'शिक्षक' शब्द में सही प्रत्यय है- अक
- 'अत्याचार' में उपसर्ग है- अति
- 'धनवन्त' में प्रत्यय है- वन्त
- 'लिखाई' में प्रत्यय है- आई
- 'चौधरानी, देवरानी' में कौन-सा प्रत्यय है- आनी
- 'गुड़िया' में प्रत्यय है- इया
- 'बनावट' में प्रत्यय है- आवट
- 'चिकनाहट' में प्रत्यय है- आहट
- 'अभियान' में उपसर्ग है- अभि
- 'स्वयंवर' शब्द में कौन-सा उपसर्ग प्रयुक्त है- स्वयं
- 'दयालु, डिब्बिया, अज्ञानी', शब्दों में है- प्रत्यय
- कौन-सा प्रत्यय लगाने से 'मधुर' विशेषण भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित हो जायेगा- ता
- 'अपमान', शब्द का उपसर्ग है- अप
- 'दुरवस्था' शब्द का उपसर्ग है- दुर
- 'पराजय' शब्द का उपसर्ग है- परा
- 'विलाप' शब्द का उपसर्ग है- वि
- 'संस्कार' शब्द का उपसर्ग है- सम्
- 'अभिशाप' शब्द का उपसर्ग है- अभि
- 'दुस्साहस' शब्द का उपसर्ग है- दुस्
- 'सजावट' शब्द का उपसर्ग है- आवट
- किस शब्द में 'इत' प्रत्यय है- प्रोत्साहित
- 'आवरण' में कौन-सा उपसर्ग लगाकर नया शब्द बनाया जा सकता है- परि
- 'कल्पना', 'शिक्षा' में इक प्रत्यय का प्रयोग करने से शब्द बनेंगे- काल्पनिक, शैक्षिक
- 'आमरण' शब्द के प्रारम्भ में लगे 'आ' को व्याकरण की दृष्टि से कहते हैं- उपसर्ग

- 'वर्ण' में 'इक' प्रत्यय लगाने पर बनने वाला शब्द होगा- वर्णिक
- 'लेखक' शब्द के अन्त में कौन-सा प्रत्यय लगा हुआ है- अक
- कौन-सा शब्द 'ईन' प्रत्यय के योग से नहीं बना है- मनोहारिन
- 'प्राक्तन' शब्द में उपसर्ग एवं मूल शब्द का सही विकल्प है- प्राक् + तन
- 'निरपराध' में प्रयुक्त उपसर्ग है- निर
- 'अ' उपसर्ग के प्रयोग से बना शब्द है- अवैतनिक
- 'सुत्' शब्द को स्वीवाचक बनाने के लिए किस प्रत्यय का प्रयोग होगा- आ
- वे शब्द जो धातु या शब्द के अंत में जोड़े जाते हैं, उन्हें कहते हैं- प्रत्यय
- 'टिकाऊ' शब्द में प्रत्यय है- आऊ
- जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं- प्रत्यय
- 'अल' किस भाषा का उपसर्ग है- अरबी
- 'नादान' में ना उपसर्ग किस भाषा से आया है- फारसी
- 'बदवू' में कौन-सा उपसर्ग प्रयुक्त है- बद
- 'उनचास' में कौन-सा उपसर्ग है- उन
- 'क्रय' शब्द में कौन-सा उपसर्ग लगाने से उसका अर्थ विपरीत हो जाएगा- वि
- 'उज्ज्वल' में कौन-सा उपसर्ग है- उत्
- 'परिमाण' में उपसर्ग बताइए- परि
- 'प्रख्यात' में उपसर्ग है- प्र
- 'बेइसाफी' में प्रयुक्त उपसर्ग है- बे
- कौन-सा उपसर्ग 'आचार' शब्द से पूर्व लगने पर उसका अर्थ 'जुल्म' हो जाता है- अति
- जो शब्दांश शब्द के आदि जुड़कर शब्द के पहले अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं, उन्हें कहते हैं- उपसर्ग
- 'गमन' शब्द को विपरीतार्थक बनाने के लिए आप किस उपसर्ग का प्रयोग करेंगे- आ
- 'आमिष' को विपरीतार्थक बनाने के लिए आप किस उपसर्ग का प्रयोग करेंगे- निः
- मूल धातु से पूर्व जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें कहा जाता है- उपसर्ग
- 'प्रत्युत्पन्नमति' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है- प्रति
- 'अध्यादेश' में प्रयुक्त उपसर्ग है- अधि
- 'उपहार' शब्द में कौन-सा उपसर्ग है- उप



■ 'चिरायु' में प्रयुक्त उपसर्ग है-	चिर
■ 'संस्कार' शब्द में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है-	सम्
■ 'अनुवाद' में प्रयुक्त उपसर्ग है-	अनु
■ निरपराध में प्रयुक्त उपसर्ग है-	निर्
■ 'उपकार' शब्द में प्रयोग हुआ है-	उपसर्ग
■ 'निराभिमान' में उपसर्ग है-	निर्

9. प्रत्यय

■ 'लटैत' में प्रत्यय है-	ऐत
■ 'गुलाबी' में प्रत्यय है-	ई
■ 'लिखावट' में प्रत्यय है-	आवट
■ 'सैनिक' शब्द में प्रत्यय है-	इक
■ 'सर्प' में कौन-सा प्रत्यय है-	अ
■ 'धूमिल' में प्रत्यय है-	इल
■ 'मधुरिमा' शब्द में प्रत्यय है-	इमा
■ किस शब्द की रचना प्रत्यय से हुई है-	रचयिता
■ 'पितृ' शब्द में 'इक' लगाने पर शब्द बनेगा-	पैतृक
■ कृदंत-प्रत्यय से बना शब्द है-	बिकाऊ
■ 'निर्वासित' शब्द में प्रत्यय है-	इत
■ 'भिड़ंत' शब्द है-	कृदंत
■ 'सुत' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए किस प्रत्यय का प्रयोग किया जाएगा-	'आ' प्रत्यय
■ 'अनुज' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए आप किस प्रत्यय का प्रयोग करेंगे-	'आ'
■ 'लेखक' शब्द के अंत में कौन-सा प्रत्यय लगा हुआ है-	'अक्' प्रत्यय
■ जो धातु या शब्द के अंत में जोड़ा जाता है, उसे कहते हैं-	प्रत्यय

■ 'लचकीला' में प्रयुक्त प्रत्यय है-	ईला
■ 'बहाव' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है-	आव
■ 'जादूगर' शब्द में प्रत्यय है-	गर
■ 'धनिक' शब्द में प्रत्यय है-	इक
■ 'कृदंत' प्रत्यय किन शब्दों के साथ जुड़ते हैं-	क्रिया
■ 'धुंधला' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है-	ला
■ 'सावधानी' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है-	ई
■ 'कनिष्ठ' शब्द में प्रयुक्त प्रत्यय है-	इष्ठ
■ 'ऊँचाई' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है-	आई

■ 'समग्रात्मकता' में मूल शब्द है-	समग्र
■ 'उत्सुकता' शब्द में प्रत्यय है-	ता
■ 'शिक्षा' में 'इक' प्रत्यय लगने पर शब्द बनेगा-	शैक्षिक
■ 'प्रगति' में कौन-सा प्रत्यय लगेगा-	शील
■ 'सुत' शब्द को स्त्रीवाचक बनाने के लिए किस प्रत्यय का प्रयोग हुआ है-	आ
■ 'इच्छा' शब्द में 'इक' प्रत्यय जोड़ने से बनने वाला नया शब्द है-	ऐच्छिक
■ 'बौद्धिक' शब्द से मूल शब्द है-	बुद्धि
■ 'विचार' शब्द में इक प्रत्यय लगने पर ही शब्द बनेगा, वह है-	वैचारिक
■ 'राष्ट्रीय' शब्द में कौन-सा प्रत्यय है-	ईय
■ 'मानव' में प्रत्यय है-	अ
■ 'मरियल' शब्द में प्रत्यय है-	ईयल
■ 'इक' प्रत्यय का उदाहरण है-	कौटुंबिक
■ कौन-सा प्रत्यय लगाने से 'मधुर' विशेषण भाववाचक संज्ञा में परिवर्तित हो जाएगा-	ता
■ 'औद्योगिक' शब्द का मूल शब्द है-	उद्योग
■ वे शब्द जो धातु या शब्द के अंत में जोड़े जाते हैं, उन्हें क्या कहते हैं-	प्रत्यय
■ 'प्रशिक्षित' शब्द में उपसर्ग और प्रत्यय है-	प्र, इत
■ 'इत' प्रत्यय से बनने वाला शब्द है-	दण्डित
■ वह शब्द जिसमें उपसर्ग और प्रत्यय दोनों का प्रयोग हुआ हो, है-	असफलता
■ जो शब्द किसी शब्द के पीछे लगकर एक नया शब्द बनाते हैं, उसे कहते हैं-	प्रत्यय

10. शब्द विचार

■ तत्सम शब्दों का मूल स्रोत है-	संस्कृत
■ 'पंकज', एवं 'दशानन' शब्द है-	योगरूढ़
■ 'लक्ष' का तद्भव है-	लाख
■ 'ओठ' शब्द का तत्सम है-	ओष्ठ
■ 'बादल' का तत्सम शब्द है-	वारिद
■ 'कंधा' का तत्सम शब्द है-	स्कंध
■ 'केला' का तत्सम शब्द है-	कदली
■ 'उलूक' का तद्भव शब्द है-	उल्लू
■ 'काक' का तद्भव शब्द है-	काग



- 'कुंभकार' का तद्भव शब्द है- कुंहार
- पुलिस किस वर्ग का शब्द है- विदेशी
- 'दंत धावन' के विकसित तद्भव शब्द क्या है- दातौन
- 'श्यामल' किस तद्भव शब्द का तत्सम रूप है- साँवला
- 'विष्टा' का तद्भव शब्द होगा- वीट
- योगरूढ़ शब्द का अर्थ है-

जो सामान्य अर्थ को छोड़कर विशेष अर्थ बताए

- एक या एक से अधिक सार्थक वर्ण समूह को कहते हैं- शब्द
- शब्दों के वर्गीकरण का आधार है- प्रयोग, रचना, उद्गम, अर्थ
- सार्थक खण्ड वाले शब्द कहलाते हैं- यौगिक
- संकर शब्द किसे कहते हैं-

दो भाषा के शब्दों से मिलकर बना शब्द

- 'पृष्ठ' शब्द है- तत्सम
- 'रेलगाड़ी' शब्द है- संकर शब्द
- 'ध्रमर' शब्द है- तत्सम
- 'आश्चर्य' शब्द का तद्भव रूप है- चकित
- 'रसोईघर' शब्द है- यौगिक
- विदेशी शब्द हैं- किताब, सिनेमा, संतरा
- 'डिस्लेक्सिया' शब्द है- आगत
- देशज शब्द है- खंगाल
- 'मार्ग' शब्द है- तत्सम
- 'अखिल' शब्द है- तत्सम
- 'धरित्री' का तद्भव रूप है- धरती
- 'खजूर' शब्द है- तद्भव
- वाक्य में प्रयुक्त शब्द को कहते हैं- पद

11. वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियाँ

अशुद्ध वर्तनी

- विधाएक आगामी रविवार को आएंगे- विधायक
- बच्चों को वज्रिफा मिलेगा- वज्रीफा
- आप रोहित को आशीवाद देकर कृतार्थ करें- आशीवाद
- महादेवी वर्मा छायावादी युग की कवियित्री हैं- कवयित्री
- राहुल की 10वीं की परिक्षा है- परीक्षा
- महंत जी को अध्यात्म का अच्छा ज्ञान है- आध्यात्म
- वाल्मीकी संस्कृत के आदिकवि माने जाते हैं- वाल्मीकि
- प्रमाणिक पुस्तकों का अध्ययन करें- प्रामाणिक

शुद्ध वर्तनी

- तुम्हें इस कार्य के लिए उचित पारिश्रमीक मिलेगा- पारिश्रमिक
- सन्यासी व्यक्ति साधारण जीवन जीते हैं- संन्यासी
- प्रताप को 'परताप' उच्चारण करने, कौन-से प्रकार से अशुद्ध उच्चारण का भेद है- स्वरालाप

12. अनेकार्थक शब्द

- जिन शब्दों में एक से अधिक अर्थ होते हैं, वे कहलाते हैं- अनेकार्थी शब्द
- 'अनुभववादी' का मतलब है- अनुभव के परे
- 'कनक' शब्द का अर्थ-समूह है- स्वर्ण, धतूरा, गेहूँ
- 'मुद्रा' शब्द का अर्थ समूह है- मोहर, छाप, सिक्का, अँगूठी
- 'काकु' शब्द का सर्वाधिक उपयुक्त अर्थ है- व्यङ्ग्य
- 'निर्वात' का समानार्थी शब्द है- बिना हवा वाला

13. संज्ञा और उसके भेद

- 'कोयला' में संज्ञा शब्द का भेद बताएं- जातिवाचक
- सोना-चाँदी में संज्ञा शब्द का भेद बताएं- द्रव्यवाचक
- 'सुंदरता' में संज्ञा शब्द का भेद बताएं- भाववाचक
- 'महेन्द्र' में संज्ञा है- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- 'बचपन, शैशव, मित्रता, अहंकार, स्वत्व, देवत्व' इन शब्दों में कौन-सी संज्ञा है- भाववाचक संज्ञा
- जिस संज्ञा से किसी वस्तु के धर्म, गुण, अवस्था का ज्ञान हो, उसे कौन-सी संज्ञा कहते हैं- भाववाचक संज्ञा
- किसी व्यक्ति या वस्तु के नाम का बोध कराने वाले शब्द कहलाते हैं- संज्ञा
- जातिवाचक संज्ञा से किसका बोध होता है-

वस्तु या प्राणी की जाति का

- यह घोड़ा अच्छा है। वाक्य में 'यह' क्या है- सार्वनामिक विशेषण
- 'यमुना' संज्ञा है- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- 'शत्रुता' संज्ञा है- भाववाचक संज्ञा
- 'मांडवी' संज्ञा है- व्यक्तिवाचक संज्ञा
- 'हरियाली' - भाववाचक संज्ञा
- बुढ़ापा भी एक प्रकार का अभिशाप है-शब्द में 'बुढ़ापा' कौन-सी संज्ञा है- भाववाचक संज्ञा
- 'बुद्धिमान' शब्द है- संज्ञा



- 'साहस' शब्द है- भाववाचक संज्ञा
- 'खुशी' शब्द है- भाववाचक संज्ञा
- 'परिपक्व' की भाववाचक संज्ञा है- परिपक्वता
- 'करुणा' शब्द है- भाववाचक संज्ञा
- 'कवि' शब्द में संज्ञा है- जातिवाचक

14. सर्वनाम और उसके भेद

- 'हम' क्या है- उत्तम पुरुष
- सर्वनाम के भेद हैं- छः
- 'यह' कौन-सा सर्वनाम है- पुरुषवाचक, निश्चयवाचक
- तू, तुम, आप, आदि हिन्दी में कौन-से पुरुषवाचक सर्वनाम हैं- मध्यम पुरुष
- 'कल वह विद्यालय जाएगा।' इस वाक्य में सर्वनाम छाँटे- वह
- प्रश्नवाचक सर्वनाम का उदाहरण है- कौन
- "मैं कुछ लाया हूँ, इसे तुम रख लो।" इस वाक्य में रेखांकित सर्वनाम का भेद बताइए- अनिश्चयवाचक
- 'कुछ खा लो।' इस वाक्य में 'कुछ' कैसा सर्वनाम है- अनिश्चयवाचक सर्वनाम
- "मैं स्वयं आ जाऊँगा।" इस वाक्य में 'स्वयं' कैसा सर्वनाम है- निजवाचक सर्वनाम
- "यह राम का घर है।" इस वाक्य में 'यह' कैसा सर्वनाम है- निश्चयवाचक सर्वनाम
- "आप मेरे घर अवश्य पधारें।" इस वाक्य में 'आप' किस पुरुष में है- मध्यम पुरुष
- "राजेन्द्र प्रसाद हमारे प्रथम राष्ट्रपति थे, आप वन्तुतः दूसरे गाँधी थे, इस वाक्य में 'आप' क्या है- मध्यम पुरुष
- जो शब्द सभी संज्ञाओं के बदले उसके स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, उन्हें कहते हैं- सर्वनाम
- 'कौन' शब्द है- प्रश्नवाचक सर्वनाम
- 'यह' शब्द है- निश्चयवाचक सर्वनाम
- किसी व्यक्ति या वस्तु के नाम की जगह दूसरे शब्दों का प्रयोग करते हो तो ऐसे शब्दों को कहते हैं- सर्वनाम
- "मैं अपने आप काम कर लूँगा।" इस वाक्य में 'आप' शब्द कौन-सा सर्वनाम है- निजवाचक
- 'कौन, किसे, कब' सर्वनाम हैं- प्रश्नवाचक सर्वनाम

15. विशेषण और उसके भेद

- 'गीला' शब्द विशेषण है- दशाबोधक
- सार्वनामिक विशेषण आते हैं- संज्ञा के पहले

- विशेषण किस शब्द की विशेषता बताते हैं- संज्ञा और सर्वनाम की
- जिस शब्द की विशेषता बताई जाए, वह है- विशेष्य
- 'यह स्थान बहुत अच्छा है' 'अच्छा' शब्द प्रयोग हुआ है- विशेषण के रूप
- 'पशु' शब्द का विशेषण है- पार्श्विक
- 'संस्कृति' का विशेषण है- सांस्कृतिक
- 'फुफेंस' शब्द है- विशेषण
- 'बलवान' शब्द है- विशेषण
- "परिश्रमी व्यक्ति ही सफल होते हैं।" इसमें "परिश्रमी" कैसा विशेषण है- गुणवाचक विशेषण
- "यह लड़का गर्वया है।" इस वाक्य में 'यह' कैसा विशेषण है- सार्वनामिक विशेषण
- "चार गावें खेत में चर रही हैं।" इनमें 'चार' कैसा विशेषण है- निश्चित संख्यावाचक
- "मुझे थोड़ा धी चाहिए।" इनमें 'थोड़ा' कैसा विशेषण है- अनिश्चित परिमाणवाचक
- 'आवश्यक' शब्द है- विशेषण
- "यह लड़का बड़ा भोला है।" इसमें 'बड़ा' शब्द है- प्रविशेषण
- 'कुछ' शब्द है- परिमाणवाचक विशेषण
- 'भारतीय' शब्द है- गुणवाचक विशेषण
- "यह दृश्य अति सुन्दर है।" इसमें 'अति' क्या है- प्रविशेषण
- 'आलस्य' शब्द का विशेषण है- आलसी
- 'सच्चा' शब्द है- विशेषण
- 'बलवान' शब्द में विशेषण है- गुणवाचक विशेषण
- 'अच्छा विद्यार्थी' में 'विद्यार्थी' शब्द है- विशेष्य
- विशेषण के कितने भेद हैं- चार
- विशेषण की विशेषता बताने वाला शब्द कहलाता है- प्रविशेषण
- 'मनोरंजक' शब्द है- विशेषण
- किसान से बना 'किसानी' शब्द है- विशेषण
- 'पापी' शब्द में है- विशेषण
- 'मानव' से विशेषण शब्द बनेगा- मानवीय
- विशेषण शब्द की विशेषता बताने वाला शब्द कहलाता है- प्रविशेषण
- 'मन में अटूट विश्वास होना जरूरी है। उपयुक्त वाक्य में 'अटूट' शब्द व्याकरण की दृष्टि से है- विशेषण



- 'मनुष्य की बढ़ोतरी के लिए ईमानदार कोशिश की है।' वाक्य में रेखांकित किए गए विशेषण का उपभेद बताइए। **गुणबोधक**
- 'पुस्तक' से कौन-सा विशेषण बनेगा- **पुस्तकीय**

16. क्रिया और उसके भेद

- काम का नाम बताने वाले शब्द को कहते हैं- **क्रिया**
- "चिट्ठिया आकाश में उड़ रही है।" इस वाक्य में 'उड़ रही है' क्रिया किस प्रकार की है- **अकर्मक**
- क्रिया के मूल रूप को कहते हैं- **धातु**
- जिस क्रिया के कार्य का फल कर्ता को छोड़कर कर्म पर पड़ता है, उसे कहते हैं- **सकर्मक क्रिया**
- 'लिखना' शब्द है- **सकर्मक**
- जिस क्रिया की रचना संज्ञा, सर्वनाम अथवा विशेषण के आधार पर की जाती है, उसे कहते हैं- **नामधातु क्रिया**
- जब दो या दो से अधिक क्रियाएँ मिलकर किसी पूर्ण क्रिया का बोध कराती हैं, उसे कहते हैं- **संयुक्त क्रिया**
- 'रोना' क्रिया है- **अकर्मक**
- 'जितना भी जोर से चीखें' वाक्य में क्रिया है- **अकर्मक**
- जहाँ एक क्रिया के समाप्त होने के तुरन्त बाद दूसरी पूर्ण क्रिया के होने का बोध होता है (जैसे-दिनेश पढ़कर सोया), वहाँ पहली क्रिया को कहते हैं- **पूर्वकालिक क्रिया**
- 'किसान खेत के सूखे पेड़ कटवा चुका है।' वाक्य में कौन-सी क्रिया है- **प्रेरणार्थक क्रिया**
- 'पीना' क्रिया है- **सकर्मक**

17. अविकारी शब्द

- 'लता बहुत अच्छा गाती है।' वाक्य में कौन-सा अव्यय है- **परिमाणवाचक**
- अरे! जरा इधर तो आ! वाक्य में कौन-सा अव्यय है- **विस्मयादिबोधक**
- "कछुआ धीरे-धीरे चलता है।" इस वाक्य में क्रियाविशेषण है- **धीरे-धीरे**
- दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ने वाले शब्द हैं- **समुच्चयवाचक**
- "उसने आँख फाड़कर देखा।" इस वाक्य में 'फाड़कर' है- **क्रियाविशेषण**
- 'अव्यय', 'क्रियाविशेषण' है- **अविकारी**
- 'वह धीरे से बोलता है', है- **क्रियाविशेषण**

- 'निमित्त' शब्द क्रियाविशेषण के किस भेद के अन्तर्गत आता है- **हेतुवाचक**
- 'अब' शब्द है- **कालवाचक क्रियाविशेषण**
- "अंकित और अंकुर विद्यालय जाते हैं।" इस वाक्य में 'और' शब्द है- **समुच्चयबोधक**
- "मैं गोपाल के बिना नहीं जाऊँगा।" इस वाक्य में 'बिना' कौन-सा अव्यय है- **संबंधबोधक**
- 'वह धीरे-धीरे जा रहा है।' वाक्य में रेखांकित पद है- **क्रियाविशेषण**
- एक पद, वाक्यांश या उपवाक्य का सम्बन्ध दूसरे पद, वाक्यांश या उपवाक्य से जोड़ने वाले अव्यय को कहते हैं- **समुच्चयबोधक अव्यय**
- 'वह छोड़ा बीमार है'-इस वाक्य में 'छोड़ा' में कौन-सा क्रियाविशेषण है- **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण**
- 'छोड़ा तेज भागता है।' इस वाक्य में 'तेज' व्याकरण की दृष्टि से है- **क्रियाविशेषण**

18. कारक

- 'हिमालय से गंगा निकलती है' कारक है- **अपादान**
- 'के लिए' किस कारक का चिह्न है- **सम्प्रदान**
- 'हे प्रभु! मेरी इच्छा पूर्ण करो।' में कारक का सही भेद है- **सम्बोधन**
- 'वृक्ष से पत्ते गिरते हैं'-इस वाक्य में कारक है- **अपादान**
- 'वह घर से बाहर गया।' इस वाक्य में कौन-सा कारक है- **अपादान**
- 'रमा ने लता को अपनी कलम दे दी है।' इस वाक्य में 'को' किस कारक का चिह्न है- **संप्रदान**
- 'वह अगले साल आएगा' - इस वाक्य में कौन-सा कारक है- **अधिकरण**
- इन फूलों का रंग बहुत सुहावना है-इस वाक्य में 'का' किस कारक का चिह्न है- **सम्बन्ध**
- "चारपाई पर भाई साहब बैठे हैं।" इस वाक्य में 'चारपाई' शब्द किस कारक में है- **अधिकरण**
- "राम ने रावण को अंततः मार डाला।" इस वाक्य में 'को' किस कारक का चिह्न है- **कर्म**
- "गंगा हिमालय से निकलती है"-इस वाक्य में कौन-सा कारक है- **अपादान**
- भूखे को भोजन दो। इस वाक्य में 'को' कौन-सा कारक है- **संप्रदान**



- “निशा रवि से बड़ी है।” इस वाक्य में ‘से’ किस कारक का परसर्ग (चिह्न) है— **अपादान**
- वृक्ष पर पक्षी बैठे हैं। इस वाक्य में ‘पर’ कौन-सा कारक है— **अधिकरण**
- ‘लड़का पेड़ से गिरा’ में कौन-सा कारक है— **अपादान कारक**
- ‘जीवन में बहुत अंधकार है।’ इस वाक्य में कारक है— **अधिकरण कारक**
- ‘मैं पाप से घृणा करता हूँ।’ में कारक है— **अपादान**
- ‘हे राम! तुम कहाँ हो’ वाक्य में से किसमें कौन-सा कारक है— **संबोधन**
- “जब बच्चे को प्रकृति से दूर रखा जाता है।” वाक्य के रेखांकित अंश में कौन-सा कारक है— **अपादान कारक**
- ‘पण्डित दूध पीता है।’ इस वाक्य में कारक है— **कर्ता, कर्म**

19. काल

- ‘मैं तुम्हारा पत्र पढ़ रहा हूँ।’ में काल है— **वर्तमान काल**
- ‘काल’ के कितने प्रकार हैं— **तीन**
- ‘भूतकाल’ के कितने प्रकार हैं— **छः**
- क्रिया के जिस रूप से यह आभास होता है कि भूतकाल में होने वाली क्रिया का होना किसी अन्य क्रिया के होने पर निर्भर है, उसे कहते हैं— **हेतुहेतुमद् भूत**
- अपूर्ण भूत का उदाहरण वाक्य है— **वह आ रहा था।**
- ‘मैं खाना खा चुका हूँ।’ इस वाक्य में भूतकालिक भेद है— **आसन्न भूत**
- “मैं आपकी प्रतीक्षा करूँगा।” इस वाक्य में क्रिया का काल है— **भविष्यकाल**
- ‘उसने पुस्तक पढ़ी।’ में क्रिया है— **सामान्य भूतकाल**

20. वाक्य-विचार

- जिन वाक्यों में सामान्य रूप से किसी कार्य के होने या करना का बोध होता है, उसे कहते हैं— **विधानार्थक वाक्य**
- ‘शूट मत बोलो’ यह किस प्रकार का वाक्य है— **निषेधवाचक**
- ‘परिश्रमी छात्र परीक्षा में सफल होता है।’ वाक्य है— **मिश्र वाक्य**
- मजदूर मेहनत करता है, किन्तु उसके लाभ से वंचित रहता है— यह कैसा वाक्य है— **संयुक्त वाक्य**
- ‘राजनीति अब एक व्यवसाय बनती जा रही है जो गुंडागिरी के बल पर चलती है’, यह कैसा वाक्य है— **मिश्र वाक्य**
- आज बहुत पानी गिरा।—यह कैसा वाक्य है— **साधारण वाक्य**

- ‘उससे अब अकेले नहीं रहा जाता है।’ यह कैसा वाक्य है— **भाववाच्य**
- ‘वहाँ जाओ’। यह कैसा वाक्य है— **आज्ञावाचक**
- ‘उसने कहा कि मैं घर जाऊँगा।’ यह कैसा वाक्य है— **मिश्र वाक्य**
- ‘तुम यह काम मत करो’। यह कैसा वाक्य है— **निषेधवाचक**
- ‘हो सकता है राम का काम बन जाय’। यह कैसा वाक्य है— **संदेहवाचक**
- ‘अरे! उसने तो कमाल कर दिया’। यह वाक्य है— **विस्मयवाचक**
- ‘ज्यों ही मैंने दरवाजा खोला कि वह आ गया’। यह वाक्य है— **मिश्र वाक्य**
- ‘वह आए तो काम बन सकता है’। यह वाक्य है— **संकेतार्थक**
- तुम विद्यालय के लिए यह कर दो या रमेश को बोल दो। वाक्य है— **संयुक्त वाक्य**
- मुझे विश्वास है कि आप अवश्य आएंगे— **मिश्र वाक्य**
- अल्प ज्ञानी व्यक्ति बुद्धिमान की कद्र करना क्या जाने। वाक्य है— **सरल वाक्य**
- नीति कहती है कि तुम गलत के साथ गलत मत करो। **मिश्र वाक्य**
- दुष्ट व्यक्ति की मित्रता स्थायी नहीं होती— **सरल वाक्य**
- अमर के रहते विद्यालय के किसी छात्र को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी की पदवी नहीं मिल सकती। **सरल वाक्य**
- समय पर पश्चाताप करना ही बुद्धिमानी की बात है— **सरल वाक्य**
- उस भाई के प्रति कृतज्ञ रहो जिसने अपना पेट काटकर तुम्हें पढ़ाया लिखाया। वाक्य है— **आज्ञावाचक**
- ‘संजय के आते ही उसका भाई चला जाता है’। यह वाक्य है— **सरल वाक्य**
- ‘मैं किसी का बुरा क्यों चाहूँ?’ वाक्य है— **प्रश्नवाचक**
- ‘अपना काम समय पर करना चाहिए।’ वाक्य है— **विधिवाचक**
- ‘न कोई अपने साथ कुछ लाता है न मरते हुए साथ ले जाता है’— **निषेधवाचक**
- पिता जी के कल लौट आने की आशा है। वाक्य है— **संदेहवाचक**
- ‘झरने की कल-कल ध्वनि कितनी संगीतमय प्रतीत होती है?’ वाक्य है— **विस्मयादिबोधक**
- ‘हो सकता है शाम तक इस कठिनाई का समधान निकल आए।’ वाक्य है— **संदेहवाचक**



- 'मौं घर लौट आएगी तो मैं उसके साथ बाजार जाऊँगी।' वाक्य है- **संकेतवाचक**
- 'अगले महीने तक परीक्षाफल आने की सम्भावना है।' वाक्य है- **संदेहवाचक**
- 'यह कौन-सा अखबार पड़ा जा रहा है?' वाक्य है- **कर्मवाच्य**
- 'भाग्यवान का हल भूत जोतता है।' - **कर्तृवाच्य**
- 'कहते हैं कि शक्ति का नाम औरत है।' - **मिश्र वाक्य**
- 'हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना मदन मोहन मालवीय ने की थी।' वाक्य है- **कर्तृवाच्य**
- 'बुराई सदैव अच्छाई से पराजित होती आई है।' वाक्य है- **कर्मवाच्य**
- 'शिकारियों ने दो हिरण मार गिराए' वाक्य है- **कर्तृवाच्य**
- 'क्या तुम यह कार्य पूरा कर सकते हो?' **कर्तृवाच्य**
- 'दुख जीवन में अवश्यभावी होता है, किन्तु मौका मिलते ही अच्छा है कि जी भर कर जीवन का मजा लिया जाए।' वाक्य है- **भाववाच्य**
- 'वह कौन-सा व्यक्ति है जिसने महात्मा गाँधी का नाम न सुना हो।' वाक्य है- **मिश्र वाक्य**
- 'जरूरत है कि हम दर्पण जैसा जीवन जीना सीखें।' रचना की दृष्टि से उपयुक्त वाक्य है- **मिश्र वाक्य**
- 'सुनने के लिए पुराना भूलना भी जरूरी है।' वाक्य है- **विधानवाचक**

21. लिंग और वचन

- शब्द के जिस रूप से एक या अनेक का बोध होता है, उसे कहते हैं- **वचन**
- 'औसू' का बहुवचन होगा- **औसू**
- 'भारतीय' शब्द का बहुवचन है- **भारतियों**
- 'प्राण' शब्द है- **बहुवचन**
- 'सूर्य' शब्द का स्त्रीलिंग होगा- **सूर्या**
- हिन्दी में शब्दों का लिंग निर्धारण किसके आधार पर होता है- **संज्ञा**
- 'कुटिया' शब्द है- **स्त्रीलिंग**
- 'देवर' शब्द का स्त्रीलिंग है- **देवरानी**
- 'परिषद्' शब्द है- **स्त्रीलिंग**
- 'आचरण' शब्द है- **पुल्लिंग**
- 'कपट' शब्द है- **पुल्लिंग**
- 'ठाकुर' का स्त्रीलिंग है- **ठकुराइन**

- 'गायक' शब्द का स्त्रीलिंग है- **गायिका**
- 'नेत्री' शब्द का पुल्लिंग रूप है- **नेता**
- 'बाल' का स्त्रीलिंग है- **बालिका**
- 'सुंदर' शब्द का स्त्रीलिंग है- **सुंदरता**
- 'स्थापना' शब्द है- **स्त्रीलिंग**
- 'पुल्लिंद' शब्द है- **पुल्लिंग**
- 'शराब' शब्द है- **स्त्रीलिंग**
- 'बुढ़ापा' शब्द है- **पुल्लिंग**
- 'वर्णन' शब्द है- **पुल्लिंग**
- 'कवि' शब्द का स्त्रीलिंग रूप है- **कवयित्री**
- 'प्रियतम' शब्द का स्त्रीलिंग रूप है- **प्रियतमा**
- 'अध्यापिका' शब्द का पुल्लिंग रूप है- **अध्यापक**
- 'दाता' शब्द का स्त्रीलिंग शब्द है- **दात्री**
- 'हतभागी' का स्त्रीलिंग है- **हतभाग्या**
- 'बातचीत' शब्द है- **स्त्रीलिंग**
- 'विद्वान' शब्द का स्त्रीलिंग रूप है- **विदुषी**
- सदा एकवचन में प्रयुक्त होने वाला शब्द है- **सहायता**
- 'निवासी' का बहुवचन रूप है- **निवासियों**
- सदा बहुवचन में प्रयुक्त होने वाला शब्द है- **औसू**
- शब्द के जिस रूप से एक से अधिक व्यक्तियों या वस्तुओं आदि का बोध हो, उसे कहते हैं- **बहुवचन**
- 'ग्वाला' शब्द का स्त्रीलिंग है- **ग्वालिन**

22. विलोम शब्द

- विपरीत अर्थ का बोध कराने वाले शब्द को कहते हैं- **विलोम शब्द**
- 'उपकार' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है- **अपकार**
- 'गम्भीर' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है- **वाचाल**
- 'आस्था' शब्द का विलोम शब्द है- **अनास्था**
- 'अनादर' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है- **आदर**
- 'करुण' शब्द का विलोम शब्द है- **निष्ठुर**
- 'औरत' शब्द का विलोम शब्द है- **आदमी**
- 'हित' शब्द का विलोम शब्द है- **अहित**
- 'एक' शब्द का विलोम शब्द है- **अनेक**
- 'विचलित' शब्द का विलोम शब्द है- **अविचलित**
- 'साधु' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है- **असाधु**
- 'बन्धन' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है- **मुक्ति**



- 'परमार्थ' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'ध्वंस' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'निंदा' शब्द का विलोम शब्द है-
- 'शयन' शब्द का विलोम शब्द है-
- 'स्वाधीन' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'सगुण' शब्दा का विलोम है-
- 'खण्डन' शब्द का विलोम है-
- 'उदय' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'आदि' शब्द का विलोम है-
- 'अनुज' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'आचार' शब्द का विलोम है-
- 'निषेध' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'अपार' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'प्राचीन' शब्द का विलोम है-
- 'ऋजुता' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'व्यग्र' का विलोम है-
- 'अवर' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'उन्मूलन' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'लाघव' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'कर्षण' शब्द का विलोम शब्द है-
- 'संतोष' का विलोम शब्द है-
- 'छिन्न' का विलोम शब्द है-
- 'घातक' शब्द का विलोम शब्द है-
- 'अति' शब्द का विलोम है-
- 'पाश्चात्य' का विपरीतार्थी शब्द है-
- 'बंधुत्व' का विलोम शब्द है-
- 'महात्मा' शब्द का विलोम है-
- 'दानी' शब्द का विलोम है-
- 'त्यक्त' शब्द का सही विलोम है-
- 'क्षणिक' शब्द का विपरीतार्थी शब्द है-
- 'आलोक' का विलोम शब्द है-
- 'ज्येष्ठ' शब्द का विलोम है-
- 'अनाथ' शब्द का विलोम है-
- 'सन्मुख' का विलोम शब्द है-
- 'अवनि' का विलोम शब्द है-
- 'श्रीगणेश' का विलोम शब्द है-
- 'उपमान' का विलोम शब्द है-

स्वार्थ
निर्माण
स्तुति
जागरण
पराधीन
निर्गुण
मण्डल
अस्त
अन्त
अग्रज
अनाचार
विधि
परिमित
अर्वाचीन
वक्रता
अव्यग्र
प्रवर
रोपण
गौरव
विकर्षण
असंतोष
संलग्न
रक्षक
अल्प
पौर्वात्य
शत्रुत्व
दुरात्मा
कृपण
गृहीत
शाश्वत
तिमिर
कनिष्ठ
सनाथ
विमुख
अम्यर
इतिश्री
उपमेय

- 'मंद' का विलोम शब्द है-
- 'अधुनातन' का विलोम है-
- 'ब्रह्म' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'बहिरंग' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'अनागत' का विलोम है-
- 'नीरस' का विलोम शब्द है-
- 'मुख्य' का विलोम शब्द है-
- 'महान' का विलोम शब्द है-
- 'धनवान' का विलोम शब्द है-
- 'उद्धत' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'कृतज्ञ' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'अनुराग' का विलोम शब्द है-
- 'दक्षिण' का विलोम शब्द है-
- 'आशा' का विलोम शब्द है-
- 'परोक्ष' का विलोम शब्द है-
- 'अमूर्त' का विलोम है-
- 'अवर' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'अनुराग' का विलोम है-
- 'संभ्य' का विलोम है-
- 'कुशल' का विलोम है-
- 'संतोष' का विपरीतार्थक शब्द है-
- 'जीवनदायिनी' का विलोम है-
- 'समष्टि' का विलोम शब्द है-
- 'विद्वान' शब्द का विलोम है-

तीव्र
पुरातन
जीव
अंतरंग
आगत
सरस
गौण
क्षुद्र
अकिंचन
सौम्य
कृतघ्न
विराग
वाम/उत्तर
निराशा
प्रत्यक्ष
मूर्त
प्रवर
विराग
असंभ्य/बर्बर
अनाड़ी
असंतोष
प्राणघातिनी
व्यष्टि
मुख

23. पर्यायवाची शब्द/समानार्थक शब्द

- 'आडम्बर' का समानार्थी शब्द है-
- 'कपाल' का समानार्थी शब्द है-
- 'छंद' का समानार्थी शब्द है-
- 'अंधकार' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'निधन' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'दिनकर' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'कानन' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'शत्रु' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'घर' का पर्यायवाची शब्द है-

पाखण्ड
खप्पर
षट्
तिमिर
देहावसान
प्रभाकर
वन
अरि
निकेतन



- 'तालाब' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'खर' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'विद्युत' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'किरण' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'हरिण' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'भवन' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'तोय' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'पृथ्वी' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'अग्नि' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'कमल' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'रात्रि' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'इंद्र' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'अमिय' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'भागीरथी' का पर्यायवाची शब्द है-
- 'खद्योत' का पर्यायवाची है-
- 'आख्यान' का पर्यायवाची है-
- 'अमृत' का पर्याय है-
- 'चन्द्रमा' का पर्याय है-
- 'जीवन-पर्यंत' शब्द का अर्थ है-
- 'हालात' का समानार्थी है-
- 'श्यामा' शब्द के विभिन्न अर्थों को व्यक्त करने वाला शब्द समूह है-
- 'फर्क' का समानार्थी है-
- 'शुचिता' शब्द का अर्थ है-
- 'इंद्र' के पर्यायवाची शब्द है-
- 'कनक' शब्द का अर्थ-समूह है-
- 'सिंह' का पर्याय है-
- 'हाथी' का पर्याय है-
- 'सान्निध्य' का समानार्थक है-
- 'क्लास' का अर्थ है-
- 'पुख्ता' का अर्थ है-
- 'अंतराल' का समानार्थी है-
- 'अनायास' का अर्थ है-
- 'आधुनिक' का समानार्थी शब्द है-
- 'अरण्य' शब्द का अर्थ है-
- 'निर्जीव' का अर्थ है-

पुष्कर
गधा
दामिनी
रश्मि
मृग
घर
जल
रत्नगर्भा
हुताशन
जलज
विभावरी
मधवा
सुधा
गंगा
जुगनू
कथाई
अमी
शशि, इंद्र, रजनीपति
जीवनभर
स्थिति
राधा, यमुना, कोयल
अंतर
पवित्रता
मधवा, पुरंदर, शचीपति
स्वर्ण, धतूरा, गेहूँ
केसरी
कुंजर
समीपता
ख्वास चर्ग
ठोस
बीच का समय
बिना प्रयास के
नवीन
जंगल
जीवन रहित

24. अनेक शब्दों के लिए एक शब्द

अनेक शब्दों/वाक्यांश

- हर काम को देरी से करने वाला-
- जिसके आर-पार देखा जा सके-
- जिसके पास कुछ न हो-
- जो बहुत बातें करता हो-
- शीघ्र प्रसन्न होने वाला-
- जिसे पार करना कठिन हो-
- दो पर्वतों के बीच की भूमि-
- जहाँ पहुँचा न जा सके-
- मनोविनोद के लिए सैर करने वाला-
- जिसके समान दूसरा न हो-
- जो आभूषण सिर पर धारण किया जाए-
- जो कहा न जा सके-
- जिसकी ग्रीवा शंख की तरह हो-
- दूर-दूर तक बिखरा-छितरा हुआ-
- जो दूसरों के सहारे जीवित रहे-
- साहित्य से सम्बन्ध रखने वाला-
- किसी विषय की पूरी छानबीन करना-
- विधान मण्डल द्वारा पारित या स्वीकृत विधि-
- पुरुष एवं स्त्री का जोड़ा-
- वह स्त्री जिसे पति ने त्याग दिया है-
- पत्र या प्रश्नादि के उत्तर की अपेक्षा करने वाला-
- वह वस्तु जो नाशवान न हो-
- चारों ओर से घेरने या आच्छादित करने वाला-
- उचित से कम मूल्य आँकना या लगाना-
- वह सायंकालीन बेला जब पशु वन से चरकर लौटते हैं-
- एक प्रकार का ज्वर, जिसमें वात, पित्त और कफ तीनों कुपित होते हैं-
- रक्त से सना हुआ-
- जो पहले कभी न हुआ हो-
- किसी साहित्यिक कृति की समालोचना करने वाला-

एक शब्द
दीर्घसूत्री
पारदर्शी
अकिंचन
वाचाल
आशुतोष
दुर्गम
उपत्यका
अगम
पर्यटक
अप्रतिम
शीर्षस्थ
अकथनीय
कम्बुग्रीव
विकीर्ण
परोपजीवी
साहित्यिक
विवेचन
अधिनियम
दम्पती
परित्यक्ता
उत्तरापेक्षी
अमर
परिधि
अवमूल्यन
सायं बेला
सन्निपात
रक्तिम
अभूतपूर्व
समीक्षक



■ एक अवस्था से दूसरी अवस्था में पहुँचना-	संक्रमण	■ जिनका समय एक हो-	समकालीन
■ पहली वर्षा का पानी-	नवोदक	■ जिसको व्याकरण का ज्ञान हो-	वैयाकरण
■ आयु में बड़ा व्यक्ति-	ज्येष्ठ	■ मोक्ष की इच्छा करने वाला-	मुमुक्षु
■ जिसमें भूली हुई किसी बात की पहचान हो-	प्रत्यभिज्ञान	■ जो पसीने से उत्पन्न हो-	स्वेदज
■ अनुशासनात्मक कार्यवाही की प्रक्रिया के फलस्वरूप पद से नीचे उतरना-	पदावनति	■ जन्म लेना और मरना-	आवागमन
■ किसी के पास रखी दूसरे की वस्तु-	थाती	■ जो बाँटा न गया हो-	अविभक्त
■ बिना अधिकार के परायी वस्तु को काम में लाना-	अनधिकृत	■ जो अच्छे कुल में उत्पन्न हो-	कुलीन
■ जो एक स्थान पर टिक कर नहीं रहता-	चायावर	■ 'आशातीत' के लिए उपयुक्त वाक्य है-	आशा से अधिक
■ 'उत्क्षिप्त' का अर्थ होता है-	ऊपर की ओर उछाला या फेंका हुआ	■ बलिदान की भावना के प्रेरक होते हैं-	देशभक्त
■ 'दूसरों के दोष देखने वाला' कहलाता है-	छिद्रान्वेषी	■ 'नगर में रहने वाला' को कहा जाता है-	नागरिक
■ 'जिसका ज्ञान इंद्रियों द्वारा हो सके' वह शब्द है-	गोचर	■ 'जिसका मन व ध्यान दूसरी तरफ हो' के लिए एक शब्द होगा-	अन्यमनस्क
■ 'जीतने की इच्छा' के लिए शब्द है-	जिगीषा	■ जो युद्ध में स्थिर रहता है-	युधिष्ठिर
■ 'जिसके विषय में ज्ञान न हो' के लिए एक शब्द है-	अज्ञान	■ इन्द्रियों को जीतने वाले के लिए एक शब्द है-	जितेन्द्रिय
■ 'सन्ध्या और रात्रि के बीच का समय' के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शब्द है-	रात	■ दो पहाड़ों के बीच खाली स्थान को कहते हैं-	घाटी
■ 'युद्ध करने का इच्छुक' के लिए सर्वाधिक उपयुक्त शब्द है-	युयुत्सु	■ 'उपकार को न मानने वाला' वाक्यांश के लिए सही शब्द है-	कृतघ्न
■ जिसका कोई अंत न हो उसे कहते हैं-	अनंत	■ जो वाणी द्वारा व्यक्त न किया जा सके-	अनिवर्चनीय
■ 'किसी बात का गूढ़ रहस्य जानने वाला'-	मर्मज्ञ	■ 'निःस्पृह' का अर्थ है-	जो इच्छा रहित हो
■ 'बिना पढ़ा हुए अंश' वाक्यांश के लिए एक शब्द-	अपठित	■ 'सबके हृदय की बात जानने वाले' के लिए एक शब्द है-	अंतर्दामी
■ 'सागर की आग' के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द है-	बड़वाग्नि	■ 'बिना पढ़ा हुआ अंश' वाक्यांश के लिए एक शब्द होगा-	अपठित
■ 'निःस्पृह' का अर्थ है-	जो इच्छा रहित हो	■ 'किसी बात का गूढ़ रहस्य जानने वाला' वाक्य के लिए एक शब्द है-	मर्मज्ञ
■ 'नौकरी चाहने के लिए लिखा जाएगा'-	आवेदन-पत्र	■ 'मरने की इच्छा' के लिए एक शब्द है-	मुमूर्षा
■ जिसे जीता न जा सके-	अजेय	■ किसी वस्तु को गलत समझ लेना है-	भ्रान्ति
■ किसी काम को चित्त लगाकर करने वाला-	दत्तचित्त	■ किसी वस्तु को दूसरे देश से क्रय कर लाने की क्रिया कहलाती है-	आयात
■ स्त्री जो कविता रचती है-	कवयित्री	■ 'दूसरे के सुख के लिए स्वयं का त्याग' के उपयुक्त शब्द है-	आत्मोत्सर्ग
■ दोपहर से पहले का समय-	पूर्वाह्न	■ 'जिसे सिद्ध करना कठिन हो' का उपयुक्त शब्द है-	दुःसाध्य
■ जो हो नहीं सकता-	असम्भव	■ 'लेन-देन की विधि' के लिए उपयुक्त शब्द है-	विनिमय
■ जो पढ़ा न जा सके-	अपठनीय	■ 'बिना-पलक गिराये' के लिए उपयुक्त शब्द है-	अनिमेष
■ जिनका जन्म पीछे हुआ हो-	अनुज	■ 'जो बहुत कठिनाई से प्राप्त हो' के लिए एक शब्द है-	दुर्लभ
■ जिसकी चार भुजायें हों-	चतुर्भुज	■ रंगमंच पर पर्दे के पीछे का स्थान कहलाता है-	नेपथ्य
■ निःसन्तान स्त्री-	बाँझ/बन्ध्या		
■ जो संविधान के अनुसार हो-	संवैधानिक		

25. मुहावरे और लोकोक्तियाँ

- 'काम काज में कोरा होना' का अर्थ है- काम न जानना
- 'टस से मस न होना'- अनुनय-विनय से न पसीजना
- 'टाँग अड़ाना'- अवरोध पैदा करना
- 'अग्नि परीक्षा देने'- कठिन परिस्थिति में पड़ना
- 'युद्ध में मृत्यु पाना' अर्थ के लिए मुहावरा है- काम आना
- 'कच्चे घड़े पानी भरना'- ठीक ढंग से काम न करना
- 'चाँदी का ऐनक लगाना'- किसी-न-किसी प्रकार प्रतिष्ठा बनाए रखना
- 'रीढ़ टूटना' का अर्थ है- निराश हो जाना
- 'शैतान की आँत' का अर्थ है- बहुत लम्बी वस्तु
- 'सुबह शाम करना' का अर्थ है- टाल-मटोल करना
- 'अँगूठा चूमना' का अर्थ है- खुशामद करना
- 'अक्ल का पुतला' का अर्थ है- बहुत बुद्धिमान
- 'गागर में सागर भरना' का अर्थ है- थोड़े शब्दों में अधिक कहना
- 'जौहर खुलना' का अर्थ है- भेद का पता लगाना
- 'नाक पर सुपारी तोड़ना' का अर्थ है- बहुत परेशान करना
- 'पेट में दाढ़ी होना' का अर्थ है- छोटी उम्र में ही बुद्धिमान होना
- 'पानी पीकर जाति पूछना'- काम निकलने के बाद सोचना
- 'मधु जहर का घूँट पी कर रह गई।' वाक्य में प्रयुक्त मुहावरे का अर्थ क्रोध को नियंत्रित करना
- 'बीरू और जय में चोली-दामन का साथ है।' रेखांकित का अर्थ है- एक-दूसरे पर निर्भरता
- 'राहुल ने तो आग में घी डालने का निश्चय किया।' रेखांकित का अर्थ है- उत्तेजित करना
- 'अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना' का अर्थ है- स्वयं अपने को हानि पहुँचाना
- 'अंधेर नगरी' का अर्थ है- अन्याय की जगह
- 'आग में घी डालना' का अर्थ है- किसी के क्रोध को भड़काना
- 'आड़े समय पर काम आना' का अर्थ है- मुसीबत में सहायक होना
- 'ईमान बेचना' का अर्थ है- अपने कर्तव्य से हट जाना

- 'काठ का डल्लू' का अर्थ है- मूर्ख
- 'द्रोपदी का चीर' का अर्थ है- कभी समाप्त न होना
- 'भगीरथ प्रयत्न' का अर्थ है- असाधारण प्रयत्न
- 'अंतड़ियों में बल पड़ना' का अर्थ है- बहुत हँसना
- 'अँगूठा दिखाना' का अर्थ है- इंकार करना
- 'उलट-फेर होना' का अर्थ है- परिवर्तन होना
- 'पापड़ बेलना' का अर्थ है- मुसीबत उठाना
- 'कान का कच्चा होना' का अर्थ है- सुनी बात पर विश्वास करना
- 'उन्नीस-बीस होना' का अर्थ है- बहुत कम अंतर होना
- 'पानी न मॉँगना' का अर्थ है- तत्काल मर जाना
- 'कलेजा होना' का अर्थ है- हिम्मत होना
- 'आडम्बर बहुत, किन्तु वास्तविकता कुछ नहीं' का अर्थ है- ऊँची दुकान फीका पकवान
- 'जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि' का अर्थ है- कवि के लिए कहीं भी अगम्य नहीं
- 'तीन दिन मेहमान चौथे दिन हैवान' का अर्थ है- अतिथि थोड़े दिन का ही अच्छा होता है
- 'एक और एक ग्यारह होते हैं' का अर्थ है- संगठन में शक्ति होती है
- 'कुम्हार अपना ही घड़ा सराहता है' का अर्थ है- अपनी बनाई हुई वस्तु सबको अच्छी लगती है
- 'काला अक्षर भैंस बराबर' का अर्थ है- अनपढ़ होना
- 'राम नाम जपना, पराया माल अपना' का अर्थ है- थोड़े से धन जमा करना
- 'नीम हकीम खतरे जान' का अर्थ है- अल्प विद्या भयंकर
- 'सौ सयाने एक मत' का अर्थ है- बुद्धिमानों के विचार एक-से होते हैं
- 'तन पर नहीं लता पान खाए अलबत्ता'- झूठा दिखावा करना
- 'गुरु गुड़ चेला चीनी' का अर्थ है- गुरु से चेले का आगे बढ़ जाना
- 'चोर की दाढ़ी में तिनका' का अर्थ है- अपराधी सदा शंका से घिरा रहता है
- 'आँख का अंधा नाम नयनमुख' का अर्थ है- गुण के विपरीत नाम



- 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' का अर्थ है—
दूसरों को उपदेश देने में प्रायः सभी कुशल होते हैं
- 'आ बैल मुझे मार' का अर्थ है—
जान-बूझकर मुसीबत में पड़ना
- 'हाथ कंगन को आरसी क्या' का अर्थ है—
प्रत्यक्ष को प्रमाण की जरूरत नहीं
- 'आप दूबे तो जग दूबा' का अर्थ है—
बुरा आदमी सबको बुरा कहता है
- 'तेल देखो तेल की धार देखो' का अर्थ है—
रुख पहचानना
- 'अधजल गगरी छलकत जाए' का अर्थ है—
अल्पज्ञ द्वारा गर्व प्रदर्शन
- 'अंधे के हाथ बटेर लगना' का अर्थ है—
अपात्र को सफलता मिल जाना
- 'आगे नाथ न पीछे पगहा' का अर्थ है—
नियंत्रण रहित होना
- 'तीन लोक से मथुरा न्यारी' का अर्थ है—
जरूरत से ज्यादा बड़ाई करना
- 'खग जाने खग ही की भाषा'
समान प्रवृत्ति वाले ही एक-दूसरे को सराहते हैं
- 'ओखली में सिर दिया तो मूसलों से क्या डर' का अर्थ है—
कठिन काम शुरू करने पर कष्ट तो सहन करने ही पड़ते हैं
- 'तू डाल-डाल में पात-पात' का अर्थ है—
दोनों चालाक
- 'बिल्ली को पहले ही दिन मारना चाहिए' का अर्थ है—
भय का शमन शुरू में ही कर देना चाहिए
- 'सिर सहलाए भेजा खाए' का अर्थ है—
दोस्त बनकर हानि पहुँचाना
- 'एक अनार सौ बीमार' का अर्थ है—
किसी वस्तु की पूर्ति कम किन्तु माँग अधिक
- शक्तिशाली की विजय अर्थ वाली लोकोक्ति है—
जिसकी लाठी उसकी भैंस
- 'रंग में भंग होना' का अभिप्राय है—
उल्लास में विघ्न पड़ना
- 'औंधी खोपड़ी' मुहावरे का अर्थ है—
मूर्ख होना
- 'अनजान सुजान, सदा कल्याण' लोकोक्ति का भावार्थ है—
मूर्ख और ज्ञानी दोनों मजे में रहते हैं
- 'दुष्ट अपनी दुष्टता नहीं छोड़ता' के लिए उचित लोकोक्ति है—
कबहुँ निरामिष होय न कागा
- 'कागज काले करना' मुहावरे का अर्थ है—
व्यर्थ लिखना
- 'अतीत में गोता लगाने' का अर्थ है—
अतीत के बारे में जानना
- 'अपनी राह बनाना', मुहावरे का आशय है—
अपने गंतव्य तक पहुँचने के लिए स्वयं प्रयत्न करना
- 'नाक कटना' मुहावरे का अर्थ है—
बदनाम होना
- 'गड़े मुर्दे उखाड़ना' का अभिप्राय है—
पुरानी बातों को दुहराना
- 'भिगी बिल्ली होना' का अभिप्राय है—
डर जाना
- 'खरी मजूरी चोखा काम' का अर्थ है—
पूरी मजदूरी देने पर अच्छा कार्य होता है
- अपना उल्टू सीधा करना—
अपना स्वार्थ सिद्ध करना
- कंगाली में आटा गीला—
मुसीबत पर मुसीबत आना
- दाँतों तले अँगुली दबाना—
आश्चर्य करना
- ईंट का जवाब पत्थर से देना—
किसी की दृष्टता का करारा जवाब देना
- ईद का चाँद होना—
बहुत दिनों बाद दिखाई देना
- खून के घूँट पीना—
अपमान सहना
- पत्थर पसीजना—
निर्दयी को भी दया आना
- जहर उगलना—
अपमानजनक बात कहना
- आम के आम गुठलियों के दाम—
दोहरा लाभ
- अधजल गगरी छलकत जाये—
डिँग हाँकना
- मखमली जूते मारना—
मधुर बातों से लज्जित करना
- बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद—
मूर्ख अच्छी वस्तु की कद्र नहीं करता
- 'घर का भेदी लंका बाँव'—
विश्वासघाती मित्र हानिकारक होता है
- 'एक तो करेला दूजा नीम चढ़ा'—
दोहरा दुर्गुण
- गड़े मुर्दे उखाड़ना—
अतीत को उद्घाटित करना
- थोड़े बेचकर सोना—
बेफिक्र सोना
- 'खेत रहना' का अर्थ है—
शहीद हो जाना
- 'अवसर का लाभ उठाना' के लिए उपयुक्त है—
बहती गंगा में हाथ धोना
- 'बाधा डालना' मुहावरे का अर्थ है—
रोड़ा अटकाना
- 'अपना हाथ जगन्नाथ' का अर्थ है—
अपने हाथ से काम करना ही उपयुक्त होता है



■ 'मैं सबको खूब समझता हूँ, तुम सब एक जैसे हो, के लिए उपयुक्त है— **चोर-चोर मौसेरे भाई**

■ 'हमेशा आनन्द का अनुभव करना' अर्थ को व्यक्त करने के लिए लोकोक्ति है—

सदा दीवाली सन्त की, बारह मास बसन्त

■ 'कार्य के आरम्भ में ही विघ्न पड़ना' किस मुहावरे का अर्थ है— **सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना**

■ 'कान का कच्चा' होने का अर्थ है—

मुनी बात पर विश्वास करना

■ 'नाक रगड़ना' का अर्थ है— **दीनतापूर्वक प्रार्थना करना**

■ 'कपटी मित्र' के लिए सही मुहावरा है— **आस्तीन का साँप**

■ 'आगे कुआँ पीछे खाई' का अर्थ है— **दोनों ओर मुसीबत**

■ अधोलिखित लोकोक्ति का सही अर्थ बताइये 'आये थे हरिभजन को ओटन लगे कपास'—

बड़ा लक्ष्य निर्धारित करके छोटे कार्यों में लग जाना

■ 'कार्य करने के बाद उसके बारे में जाँच करना' अर्थ वाली कहावत है— **पानी पीकर जाति पूँछना**

■ 'नाक का बाल होना' मुहावरे का अर्थ है— **अधिक प्रिय होना**

■ 'औंधी खोपड़ी' मुहावरे का अर्थ है— **मूर्ख होना**

■ 'एक मुँह दो बात' मुहावरे का अर्थ है—

अपनी बात से पलट जाना

■ स्थिति में परिवर्तन न होने के भाव को व्यक्त करने वाली सही कहावत है— **ढाक के तीन पात**

■ 'जान में जान आना' का अर्थ है— **चैन मिलना**

■ 'जी भर आना' का अर्थ है— **दुःखी होना**

■ 'छाँह तक न पाना' मुहावरे का अर्थ है—

पास तक न आने देना

26. रस

■ शान्त रस का स्थायी भाव है— **निर्वेद**

■ 'हाय रुक गया यही संसार, बना सिन्दूर अनल अंगार'—पद में निहित रस चुनकर लिखिये— **करुण**

■ प्रिय वस्तु के नाश के कारण उत्पन्न होने वाले चित्त की व्याकुलता कहलाती है— **करुण रस**

■ 'बैठी खिन्ना दक दिवस वे गेह में थी अकेली। आके आँसु दृग-युगल में वे धरा को भिगोते।।' उक्त अवतरण में कौन-सा रस है— **करुण**

■ 'कहत नटत रीझत खिझत, मिलत खिलत लजियात। भरे भीन में करत है नैननु ही सौं बात।।' उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा रस है— **शृंगार**

■ स्थायी भाव में उत्पन्न और विलीन होते रहने वाले भाव कहलाते हैं— **संचारी भाव**

■ अद्भुत रस का स्थायी भाव है— **विस्मय**

■ 'इस करुण कलित हृदय में, अब विकल रागिनी बजती, क्यों हाहाकार स्वरो में वेदना असीम गरजती।' उक्त पंक्तियों में रस है— **वियोग शृंगार**

■ शृंगार रस की रस मैत्री किससे है— **हास्य**

■ चीभत्स रस का स्थायी भाव है— **जुगुप्सा**

■ करुण रस के देवता हैं— **यम**

■ सात्विक अनुभाव कितने हैं— **आठ**

■ शृंगार को रसराज की संज्ञा किसने दी— **भोजराज**

■ 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कथन किसका है— **विश्वनाथ**

■ काव्यशास्त्र के अनुसार रसों की सही संख्या है— **नी**

■ 'ताव दै दै मूँछन कैगूरन पै पाँव दै दै धाव दै दै अरि मुख कूदि परै कोटि मै।' उक्त पद में रस है— **वीर**

■ निर्वेद स्थायी भाव है— **शान्त**

■ हास, शोक, उत्साह आदि भाव रस के किस अंग में आते हैं— **स्थायी भाव**

■ 'झाँसी की रानी' कविता में निहित रस का नाम है— **वीर**

■ 'विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः' सूत्र किसका है— **भरतमुनि**

■ 'उत्साह' किस रस का स्थायी भाव है— **वीर**

■ शृंगार रस का स्थायी भाव है— **रति**

■ किस रस को 'रसराज' कहा जाता है— **शृंगार रस**

■ शोक किस रस का स्थायी भाव है— **करुण रस का**

■ 'बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाव। सौंह करे भौंहनि हँसै, देन कहै, नटि जाय।' उक्त पंक्ति में रस है— **शृंगार**

■ शान्त रस को सर्वश्रेष्ठ किसने माना— **अभिनव गुप्त**

■ क्रोध किस रस का स्थायी भाव है— **रौद्र**

■ 'किलकत कान्ह घुटुरुवनि आवत।' पंक्ति में कौन-सा रस है— **वात्सल्य रस**

27. छन्द

- पहले और तीसरे चरण में 13-13 मात्राएँ और दूसरे तथा चौथे चरण में 11-11 मात्राएँ होती हैं, वह छन्द है— **दोहा**
- जहाँ प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं। चरण के अन्त में जगण और तगण का प्रयोग न हो, वहाँ छन्द होता है— **चौपाई**
- विषम मात्रिक छन्द है— **कुण्डलिया**
- दोहा का उल्टा होता है— **सोरठा**
- दोहा और रोला के संयोग से बनने वाला छन्द है— **कुण्डलिया**
- दोहा और सोरठा किस प्रकार के छन्द हैं— **अर्द्धसममात्रिक**
- 'अवधि शिला का उर पर या गुरुभार। तिल-तिल काट रही थी, दृगजल धार।' में छन्द है— **बरवे**
- छन्द में कुल गण होते हैं— **आठ**
- दोहा के विषम चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं— **तेरह**
- छन्द को पढ़ते समय आने वाले विराम को कहते हैं— **यति**
- चौपाई छन्द में कितने चरण होते हैं— **चार**
- सोरठा छन्द की प्रत्येक पंक्ति में कुल मात्राएँ होती हैं— **24**
- 'कागद पर लिखत न बनत कहत सन्देसु लजात। कहिहँ कय तेरो हियौ मेरे हिय की बात।।' इसमें प्रयुक्त छन्द है— **दोहा**
- 'मुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे। बिहँसे करुणा ऐन, चिरौ जानकी लखन तन।।' उपर्युक्त पद्य में छन्द है— **सोरठा**
- 'बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय। सीँह करै भीहनि हँसे, दैन कहै नटि जाय।।' उपर्युक्त पंक्ति में छन्द है— **दोहा**
- 'बंदऊ गुरुपद कंज, कृपा सिन्धु नररूप हरि। महामोहतम पुंज, जासु वचन रविकर निकर।।' में छन्द है— **सोरठा**
- किस छन्द के प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ तथा अन्त में लघु और गुरु होता है— **हरिगीतिका**
- 'चौपाई' छन्द के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ होती हैं— **सोलह**
- 'मूक होइ वाचाल पंगु चढ़इ गिरिवर गहन। जासु कृपा सो दयाल द्रवड सकल कलि मल दहन।।' उपर्युक्त पंक्तियों में कौन-सा छन्द है— **सोरठा**
- 'दोहा' में कितनी मात्राएँ होती हैं— **चौबीस**

28. अलंकार

- 'अंबर-पनघट में डुबो रही तारा घट उषा नागरी।' पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है— **रूपक**
- कनक-कनक ते सौगुनी मादकता अधिकाय। या खाए बैराय जग वा पाए बौराय।। पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है— **यमक**

- बाँधा या विधु को किसने, इन काली जंजीरों से। मणि वाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ हीरों से।। पंक्ति में प्रयुक्त अलंकार है— **अतिशयोक्ति**
- "धवनि-मयी कर के गिरि-कंदरा। कलित-कानन केलि-निकुंज को।।" में प्रयुक्त अलंकार के भेद हैं— **वृत्त्यानुप्रास**
- "पट-पीत मानहुँ तड़ित रुचि, सुचि नैमि जनक सुतावर।" काव्य पंक्ति में निरूपित अलंकार है— **उत्प्रेक्षा**
- "संदेसनि मधुवन-कूप भरे।" काव्य-पंक्ति में निरूपित अलंकार है— **अतिशयोक्ति**
- 'चरर मरर खुल गए अरर खस्फुटों से' पद्यांश में प्रयुक्त अलंकार है— **अनुप्रास**
- "बड़े न हूजे गुनन बिनु विरद बड़ाई पाय। कहत चतूरे सों कनक, गढ़ी न जाय।" में कौन-सा अर्थालंकार है— **अर्थान्तरन्यास**
- काव्य को आभूषित करने वाले उपकरण को कहते हैं— **अलंकार**
- 'कमलनयन' में कौन-सा अलंकार है— **उपमा**
- अनुप्रास अलंकार किसका उदाहरण है— **शब्दालंकार**
- एक वर्ण का अक्षर की आवृत्ति एक से अधिक बार किस अलंकार में होती है— **अनुप्रास**
- कविता में जहाँ शब्दगत तथा अर्थगत दोनों ही प्रकार का चमत्कार है, वहाँ अलंकार का कौन-सा भेद होता है— **उभयालंकार**
- मेघ आए बड़े वन टन के सेंवर के 'पाहुन ज्यों आए हों गाँव में शहर के' उपर्युक्त पंक्तियों में अलंकार है— **मानवीकरण**
- जहाँ उपमेय में उपमान की सम्भावना की जाए, वहाँ अलंकार होता है— **उत्प्रेक्षा**
- 'उसका मुख चन्द्रमा के समान सुन्दर है' इस वाक्य में साधारण धर्म है— **सुन्दरता**
- 'असंख्य कीर्ति रश्मियाँ, विकीर्ण दिव्य दाह सी' में अलंकार है— **उपमा**
- 'चारु चन्द्र की चंचल किरणें, खेल रही हैं जल-थल में' में अलंकार है— **अनुप्रास**
- 'लाल चेहरा है नहीं फिर लाल किसके' में अलंकार है— **यमक**
- 'मुख मयंक सम मंजु मनोहर' में अलंकार है— **उपमा**
- 'हरिपद कोमल कमल से' में अलंकार है— **उपमा**
- 'रहिमन जो गति दीप की, कुल कपूत गति सोय। बारे उरियारै लगै, बड़ै अंधेरो होय।।' प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है— **श्लेष**
- 'कबिरा सोई पीर है, जे जाने पर पीर। जे पर पीर न जानई, सो काफिर बेपीर।।' प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है— **यमक**



- जहाँ एक शब्द अथवा शब्द-समूह का एक से अधिक बार प्रयोग हो, किन्तु उसका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न हो, वहाँ कौन-सा अलंकार होता है— **यमक**
- जहाँ वर्णों की आवृत्ति होती है वहाँ अलंकार होता है— **अनुप्रास**
- 'पीपर पारत सरिस मन डोला' पंक्ति में कौन-सा अलंकार है— **उपमा**
- 'कै कै कारन रोवै बाला। जनु टूटै मोतिन्ह के माला।।' में अलंकार है— **उत्प्रेक्षा**
- 'पूत सपूत तो क्यों धन संचै? पूत कपूत तो क्यों धन संचै? में अलंकार है— **लाटानुप्रास**
- 'हरि मुख मानो मधुर मयंक' में अलंकार है— **उत्प्रेक्षा**
- 'कहै कवि बेनी, बेनी ब्याल की चुराय लीनी' में अलंकार है— **यमक**
- जहाँ छन्द के शब्दों के अन्त में समान स्वर या व्यंजन की आवृत्ति हो, वहाँ पर अलंकार होगा— **अन्त्यानुप्रास**
- "फूले कास सकल महि छाई। जनु बरसा रितु प्रकट बुढ़ाई।" में अलंकार है— **उत्प्रेक्षा**
- 'तेरी बरछी ने बर छीने हैं', खलन के पंक्ति में कौन-सा अलंकार है— **यमक**
- 'नवल सुन्दर श्याम-शरीर की, सजल नीरव-सी कल-कान्ति श्री।' में कौन-सा अलंकार है— **उपमा**
- 'तरनि तनूजा तट तमाल तरुवर बहु छाये' में कौन-सा अलंकार है— **अनुप्रास**
- "चरण-कमल बंदी हरिराई।" में अलंकार है— **रूपक**
- 'सोहत ओढ़े पीत पट, श्याम सलौने गात। मनो नीलमणि शैल पर, आतप पर्यौ प्रभात।।' प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है— **उत्प्रेक्षा**
- 'एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास' में अलंकार है— **रूपक**
- जहाँ उपमेय व उपमान को सादृश्य का आभास सत्य मान लिया जाता है। वहाँ पर अलंकार होता है— **भ्रान्तिमान**

29. भाषा शिक्षण

- पढ़ाया गया विषय छात्रों को कितना समझ में आया, इसे जात करने का सिद्धान्त है— **अभ्यास सिद्धान्त**
- भाषा के सभी रूपों में से किस रूप का सबसे अधिक प्रयोग किया जाता है— **मौखिक रूप का**

- "भाषा संसार का नादमय चित्र है, ध्वनिमय स्वरूप है, यह विश्व की हृदय तंत्री की झंकार है।" भाषा के सम्बन्ध में यह वाक्य लिखा है— **सुमित्रानंदन पंत**
- शिक्षार्थी द्वारा किसी विषय पर बोलना या लिखना भाषा के किस पक्ष को उजागर करता है— **अभिव्यक्ति**
- "भाषा निश्चित प्रयत्न के फलस्वरूप मनुष्य के मुख से निःसृत वह सार्यक ध्वनि समष्टि है, जिसका विश्लेषण और अध्ययन हो सके।" यह वाक्य लिखा है— **भोलानाथ तिवारी**
- अधिगम शब्द का अर्थ है— **सीखना**
- "शिक्षण एक ऐसा व्यवस्थित प्रक्रम है, जिसमें छात्र विभिन्न क्रिया-कलापों द्वारा कुछ सीखता है।" किसकी पंक्ति है— **स्मिथ**
- 'शिक्षक द्वारा श्यामपट्ट पर लिखना' किस आयाम के अन्तर्गत आता है— **प्रस्तुतीकरण**
- तैयारी आयाम के अन्तर्गत **विषय का परिचय दिया जाता है**
- टाइपिंग सीखना किस अधिगम के अन्तर्गत आता है— **क्रियात्मक अधिगम**
- जब व्यवहार का केन्द्र भाषा हो, तो भाषा अधिगम जुड़ता है— **शिक्षण तथा अनुभव**
- अधिगम है— **परिवर्तनशील**
- "शिक्षण एक ऐसी अनुशासित सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक अपने से कम अनुभवी लोगों के व्यवहार को प्रभावित करता है और उन्हें समाजोपयोगी बनाने में सहायक होता है।" उक्त पंक्ति कही गई है— **मोरिसन**
- यदि किसी पाठ को पाँच शिक्षार्थी अलग-अलग ढंग से सोचते हैं, तो शिक्षक का कार्य है— **पाठ के सही तथा उचित निष्कर्ष से शिक्षार्थियों को अवगत कराना चाहिए**
- कविता-पाठ करवाना किस सिद्धांत के अन्तर्गत आता है— **क्रियाशीलता का सिद्धांत**
- किस विधि के अन्तर्गत अध्यापक व्याकरण विषयों को प्रसंग के साथ जोड़ने का प्रयास करता है— **प्रासंगिक विधि**
- व्याकरण नियमों को जाने बिना भाषा के शुद्ध रूप का अनुभव किया जाता है, वह विधि है— **प्रत्यक्ष विधि**
- शालिनी पर्यायवाची शब्द समझाने के लिए विद्यार्थियों को कुछ समूह में बाँटकर उनसे एक खेल करवाती है। यह विधि कहलाती है— **खेल विधि**
- भाषा शिक्षण में व्याकरण का उद्देश्य है— **विद्यार्थी को भाषा का शुद्ध प्रयोग करना सिखाना**



- भाषा शिक्षण के सिद्धान्तों में से किस सिद्धान्त में छात्रों को सबसे कम मेहनत करनी पड़ती है- **प्रासंगिक विधि**
- प्रायः देखा जाता है कि बच्चे व्याकरण विषय में ज्यादा रुचि नहीं लेते हैं। इसके पीछे कारण हो सकता है- **विद्यालयों में व्याकरण पढ़ाने के लिए पुस्तकों का प्रयोग करना**
- विचारात्मक अधिगम के अन्तर्गत आता है- **पहाड़े सीखना**
- मोनिका पहली कक्षा को खेल द्वारा वर्ण सिखाती है। यह किस शिक्षण सिद्धान्त के अन्तर्गत आएगा- **खेल/मनोरंजन**
- पलक प्रसिद्ध व्याकरणशास्त्री की पुस्तकों को पढ़कर व्याकरण सीखने का प्रयास करती है। उसका यह प्रयास भाषा-शिक्षण के किस सिद्धान्त को दर्शाता है- **प्रयोग विधि**
- शिक्षण के सभी आयामों में से नियमों या सिद्धान्तों को शिक्षार्थियों तक पहुँचाने का प्रयास कहलाता है- **सामान्यीकरण**
- बच्चे किस विषय में अधिक रुचि लेते हैं- **जिन विषयों को उनके जीवन से जोड़ा गया हो**

30. भाषा कौशल

- वर्णोच्चारण विधि का प्रयोग किस भाषा कौशल में किया जाता है- **पठन कौशल**
- जो बच्चे सुन नहीं सकते- **उन्हें भाषा सीखने में समय लगता है**
- दैनिक कार्यों में सबसे अधिक किन दो कौशलों का प्रयोग होता है- **मौखिक अभिव्यक्ति तथा श्रवण कौशल**
- यदि अध्यापक सेब के चित्र को देखकर छात्रों से उसके विषय में कुछ वाक्य बोलने के लिए कहे, तो यह किस कौशल से सम्बन्धित होगा- **मौखिक कौशल**
- आँख, कान तथा हाथ का प्रयोग किस शिक्षण विधि के लिए आवश्यक माना जाता है- **मॉण्टेसरी विधि**
- अध्यापक द्वारा बनाए गए बिन्दुओं से वर्ण बनाने का प्रयास छात्र लेखन कौशल की किस विधि में करता है- **रूपरेखानुकरण विधि**
- ऊपर लिखे वाक्यों को देखकर लिखना कहलाता है- **अनुलेख**
- याशी की अध्यापिका निश्चित समय अंतराल पर मौखिक, लिखित तथा प्रयोगात्मक परीक्षा लेती है। अध्यापिका मूल्यांकन करने के लिए किस प्रविधि का प्रयोग कर रही है- **परिमाणात्मक प्रविधि**
- बच्चों की पठन-कुशलता का विकास करने में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है- **विभिन्न संदर्भों से जुड़ी सामग्री**

- किस विकल्प में पढ़कर अर्थ ग्रहण किया जाता है- **पढ़ना, सुनना**
- प्राथमिक स्तर पर भाषा कौशल का मूल्यांकन किया जाता है- **शब्दों के अर्थ समझने की क्षमता के आधार पर**
- हिन्दी भाषा-शिक्षण में मूल्यांकन प्रक्रिया है- **मात्रात्मक तथा गुणात्मक**
- श्रवण कौशल का हिस्सा नहीं है- **अपने विचारों को अभिव्यक्त करना**
- भाषा सीखने की प्रक्रिया का अन्तिम कौशल है- **लिखना**
- अनुलेख, श्रुतलेख तथा सलेख किस कौशल से जुड़े हैं- **लेखन**
- छात्र विषय में रुचि ले रहे हैं या नहीं। इसका पता लगाने के लिए हिन्दी की अध्यापिका किस विधि का प्रयोग करेगी- **जाँच विधि**
- रोमा पहली कक्षा के विद्यार्थियों से बालगीत सुन रही है। इस प्रक्रिया से रोमा किस कौशल का मूल्यांकन कर रही है- **उच्चारण कौशल**
- मूल्यांकन की प्रविधि का वर्गीकरण किया जाता है- **गुणात्मक तथा परिमाणात्मक**
- गीतिका 'शब्द' को 'सब्द' बोलती है। मूल्यांकन की किस प्रविधि के कारण इसका पता लगाया गया है- **परिमाणात्मक प्रविधि**
- राधिका ने अपने भाषण में शिक्षक दिवस से सम्बन्धित कई महत्वपूर्ण जानकारी दी। भाषण को ग्रहण करने में सहायक है- **श्रवण कौशल**
- शबनम ने कल के मैच का आँखों देखा हाल अपने सहपाठियों को सुनाया। इस स्थिति में शबनम किस कौशल का प्रयोग कर रही है- **भाषण कौशल**
- 'निबंधात्मक, लघु उत्तरीय तथा वस्तुनिष्ठ' किस परीक्षा के रूप है- **लिखित परीक्षा**
- मूल्यांकन से हमें छात्रों के - **गुण तथा दोष, दोनों का पता चलता है**
- कनक ने कक्षा के सभी छात्रों को सारांश लेखन का कार्य दिया है। इस प्रक्रिया के माध्यम से किस कौशल का मूल्यांकन किया जा सकता है- **लेखन कौशल**

31. शिक्षण में आने वाली समस्याएँ

- शोभना 'ब' को 'व' लिखती है, उसकी इस समस्या का कारण है- **डिसग्राफिया**
- 90-109 बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी किस श्रेणी में आते हैं- **औसत**



- बहुभाषिक कक्षा में हिन्दी-भाषा शिक्षण के लिए सबसे उत्तम तरीका है- **आपस में बातचीत का अवसर देना**
- नीरज 'इ' को 'र' बोलता है। उसकी इस अशुद्धि को किस प्रकार दूर किया जा सकता है- **शुद्ध उच्चारण द्वारा**
- आपकी कक्षा का कोई छात्र अच्छे से पढ़ नहीं पा रहा है। इस स्थिति में आप - **कारण जानने का प्रयास करेंगे**
- उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य है- **छात्र के दोषों को दूर करना**
- मौखिक भाषा को जाँचने के लिए कौन-सा तरीका महत्वपूर्ण होता है- **छात्रों से बातचीत करना**
- साक्षात्कार विधि मेंकी जाँच की जाती है- **व्यक्तिगत दोष**
- शिक्षण अधिगम सामग्री विषयों को बनाती है- **सरल**
- 'चार्ट' का प्रयोग करना शिक्षण सामग्री का प्रकार है- **दृश्य**
- पिछले शनिवार को उत्कर्ष के विद्यालय में 'स्टेनली का डब्बा' फिल्म दिखाई गई। फिल्म में शिक्षण सहायक सामग्री का कौन-सा प्रकार है- **दृश्य-श्रव्य सामग्री**
- बच्चों को ऐतिहासिक स्थल की जानकारी देने का प्रभावी तरीका है- **छात्रों को उस स्थल के भ्रमण हेतु प्रेरित करना**
- किस सामग्री का विद्यालयों में शिक्षण के लिए अधिक प्रयोग किया जाता है- **पाठ्य-पुस्तक**
- बाल साहित्य होना चाहिए- **ज्ञानवर्धक**
- पाठ्य-पुस्तकों की सबसे बड़ी विशेषता है- **स्वाध्याय की ओर प्रेरित करना**
- पठन-पाठन में अति आवश्यक सहायक सामग्री होती है- **श्यामपट्ट**
- सोहेल अपनी कक्षा में कविता पढ़ना चाहता है उसके लिए सर्वोत्तम सहायक सामग्री है- **टेप-रिकॉर्डर**
- भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शिक्षक दिवस पर भाषण दिया गया। उनके इस भाषण को सभी विद्यालयों में टेलीविजन तथा कम्प्यूटर के माध्यम से दिखाया गया। शिक्षकों द्वारा इस प्रक्रिया का प्रयोग करना शिक्षण सामग्री का प्रकार है- **दृश्य-श्रव्य सामग्री**
- आपके द्वारा पढ़ाए जा रहे विषय में छात्र रुचि नहीं ले रहे हैं। एक शिक्षक कि दृष्टि से आप क्या करेंगे- **अपने पढ़ाने के तरीके को बदलेंगे**
- पाठ-योजना का निर्माण करते समय केन्द्र में किसे रखना चाहिए- **विद्यार्थी**

- चौदनी शर्मा हिन्दी की अध्यापिका है। वह कभी-कभी कुछ विषयों को समझाने के लिए डीवीडी का प्रयोग करती हैं। डीवीडी का प्रयोग करना शिक्षण सामग्री का प्रकार है- **दृश्य-श्रव्य सामग्री**
- कुछ छात्र हकलाते या तुतलाते हैं। ऐसे परिस्थिति में शिक्षक होने के नाते आपका कार्य है- **उन्हें अधिक से अधिक बोलने के लिए प्रेरित करना**
- परीक्षण तथा निरीक्षण, विधि है- **निदानात्मक**

32. भाषा, बालक व भाषा शिक्षण

- मातृभाषा शिक्षण का सिद्धांत है- **क्रियाशीलता, अभिप्रेरणा, रुचि का सिद्धांत**
- उच्च प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली भाषा है- **संघीय भाषा-सह संघीय भाषा, विदेशी भाषा**
- प्राथमिक स्तर पर पढ़ाई जाने वाली भाषा है- **मातृ भाषा**
- राष्ट्र भाषा किसका प्रतीक है- **राष्ट्रीय एकता**
- अंतर्राष्ट्रीय भाषा का कार्य है- **विभिन्न राष्ट्रों का एकीकरण**
- भाषा सीखने का परम उद्देश्य है- **अपने विचारों को आदान-प्रदान में भाग लेने की क्षमता प्राप्त करना**
- मातृभाषा की विशेषता है- **अनुवाद करके पढ़ाया जाना**
- भावाभिव्यक्तिकरण का सर्वोत्कृष्ट साधन है- **मातृभाषा**
- भाषा का प्राथमिक रूप है- **बोलना**
- भाषा-शिक्षा का उद्देश्य है- **सुवाचन, सुवाणी व सुलेखन**
- भाषा की पढ़ाई- **समूची पाठ्यचर्या (समस्त विषयों) में व्याप्त है**
- बच्चों को अपने लेखन के प्रति आत्मविश्वास जगाने के लिए जरूरी है कि- **उनकी वर्तनी की शुद्धता को सराहा जाए**
- पहली-दूसरी कक्षा के बच्चों को साथ भाषा सिखाने के लिए जरूरी है कि उन्हें- **वात कहने के तरीकों का अभ्यास करवाया जाए**
- भाषा की कक्षाओं में लोकतांत्रिकता बनाए रखने के लिए जरूरी है- **स्वतंत्र एवं मौलिक अभिव्यक्ति के अवसर देना**
- प्राथमिक स्तर पर हिन्दी भाषा सिखाने का सर्वोपरि उद्देश्य है- **भाषा के विभिन्न प्रयोगों की क्षमता का विकास करना**
- विद्यालय आने से पूर्व बच्चों के पास- **व्याकरण की सचेत समझ नहीं होती है**
- बच्चे विद्यालय आने से पहले- **अपनी बोलचाल की भाषा के अनुभवों से लैस होते हैं**



- 'प्राथमिक स्तर की शिक्षा मुख्यतः भाषा शिक्षा है।' इस कथन का निहितार्थ यह है कि— **बच्चों के भाषा-विकास पर विशेष ध्यान दिया जाए**
- भाषा में सीखने और भाषा अर्जित करने में अंतर का सर्वप्रमुख कारण है— **भाषाची परिवेश**
- चॉम्स्की के अनुसार बच्चों के पास भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है। अतः हिन्दी भाषा की कक्षा में बच्चों को—
विविध भाषा-प्रयोगों से परिचय प्राप्त करने के अवसर दिये जाने चाहिए
- प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है—
दूसरों की बातों को धैर्य से सुनना और सुनी गई बात पर अपनी टिप्पणी देना
- विद्यालय आने से पूर्व बच्चों के पास—
अपनी भाषा की जटिल और समृद्ध संरचनाएँ होती हैं
- भाषा अर्जन और भाषा अधिगम में मुख्य अंतर— **स्वाभाविकता**
- प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का उद्देश्य है—
हिन्दी के विविध रूपों से परिचय कराना
- भाषा एक औजार है जिसका उपयोग करते हैं—
जीवन-जगत को प्रस्तुत करना, जिंदगी को समझना, जिंदगी से जुड़ने के लिए
- भाषा की कक्षा का माहौल होना चाहिए— **जहाँ बच्चों को उनकी बात कहने और सुनने के अधिकाधिक अवसर मिले**
- हिन्दी भाषा की कक्षा में एक बच्चा बोलते समय अपनी मातृभाषा के शब्दों का प्रयोग करता है। ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे— **उसे टोकेंगे नहीं और उसकी मातृभाषा के शब्दों के स्थान पर हिन्दी के शब्दों का प्रयोग कर वाक्य दोहराएँगे**
- "भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है।" यह विचार किसकी देन है— **चॉम्स्की**
- त्रिभाषा सूत्र में हिन्दी का स्थान है— **राष्ट्रभाषा के रूप में**
- उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने का उद्देश्य है—
विभिन्न स्थितियों में प्रभावी संप्रेषण की कुशलता का विकास करना
- कक्षा आठ में एक बच्ची 'लड़का' को 'लरका' बोलती है। इसका संभावित कारण है— **यह उसकी मातृभाषा का प्रभाव है**
- भाषा अनुकरण के माध्यम से ही सीखी जाती है। यह विचार किससे सम्बद्ध है— **स्किनर से**

- 'अहं-केन्द्रित भाषा' की संकल्पना किसके साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी है **पियाजे**
- भाषा सीखना और भाषा के बारे में सीखना—
दो भिन्न संकल्पनाएँ हैं
- बच्चों की भाषा-प्रयोग सम्बन्धी त्रुटियों पर अधिक कठोर प्रतिक्रिया व्यक्त करना अथवा उन्हें ही इंगित करते रहना—
बच्चों की भाषिक अभिव्यक्ति को अवरुद्ध कर सकती है
- भाषा-शिक्षण की प्रक्रिया—
विभिन्न विषयों की कक्षाओं में भी संभव है
- भाषा-शिक्षक का दायित्व है कि वह— **सभी बच्चों में भाषा प्रयोग की एकसमान कुशलता विकसित करे**
- विद्यालय आने से पूर्व बच्चे— **अपनी भाषा में समझने-समझाने की कुशलता से लैस होते हैं**
- बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता जन्मजात होती है। अतः—
बच्चों को समृद्ध भाषिक परिवेश उपलब्ध कराया जाना चाहिए
- भाषा शिक्षण में सहायक है— **शुद्ध भाषा पर बल**

33. शिक्षण व शिक्षक

- शिक्षण सूत्रों, सिद्धांतों, विधियों, प्रविधियों, युक्तियों, साधनों का ज्ञान किसके अन्तर्गत होना अनिवार्य है—
पाठयोजना निर्माण में
- भाषा शिक्षण में उद्योतन सामग्री के प्रयोग का लक्ष्य है—
बालकों के भावों को उत्प्रेरित करना
- भाषा शिक्षण में परम्परागत उद्योतन सामग्री के रूप में बहुत अधिक सहायक किसे समझा जाना चाहिए— **पाठ्यपुस्तक**
- "शिक्षक स्वयं बहुत बड़ी उद्योतन सामग्री होती है।" यह कथन की सार्थकता है, क्योंकि—
शिक्षक मौखिक उदाहरण प्रस्तुत करने में सक्षम होता है
- वैयक्तिक भिन्नता आधारित है— **मनोवैज्ञानिक सिद्धांत पर**
- सामान्य शिक्षण में अध्यापक एक कालांश (Period) में अनेक प्रयोग करता है— **कौशलों का**
- जिसके माध्यम से जिन चित्रों, स्ट्रिप्स व शाब्दिक उदाहरणों को देखा या पढ़ा जा सकता है वे छात्रों के लिए कहलाती है—
उद्योतन सामग्री
- शिक्षण का प्रयोग मात्र ज्ञान कराता है— **भाषा का**



- वे सभी साधन जिन्हें सुनकर बालक पाठ को सरलता एवं शीघ्रता से सीख सके, कहलाते हैं— **श्रव्य साधन**
- ये ऐसे साधन हैं, जिनमें बालकों की दृश्य-श्रव्य दोनों ही इंद्रियों का प्रयोग एक साथ होता है— **दृश्य-श्रव्य साधन**
- एक भाषा शिक्षक के रूप में आप अपनी क्या जिम्मेदारी महसूस करते हैं— **बच्चों का भाषा के विविध स्वरूपों और प्रयोगों से परिचय**
- हिन्दी भाषा-शिक्षक को यह स्वीकार करना चाहिए कि— **गलतियाँ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का अभिन्न हिस्सा है**
- भाषा शिक्षक को स्वयं अपनी भाषा प्रयोग की क्षमता को बढ़ाना चाहिए क्योंकि— **उसका भाषा प्रयोग कक्षा में भाषा वातावरण का निर्माण करता है**
- कक्षा में प्रिंट समृद्ध वातावरण से आशय है— **कक्षा की दीवारों पर रंगीन कविता आदि पेंट कराना**
- भाषा-शिक्षक के रूप में आपके लिए महत्वपूर्ण है— **बच्चों द्वारा बेझिझक भाषा प्रयोग करवाना**

34. भाषा-शिक्षण की विधियाँ

- खेल द्वारा शिक्षण विधि के अन्तर्गत उच्च कक्षाओं के लिए उत्तम उपयोग विधि है— **समस्या-पूर्ति का खेल, परिभाषाओं की होड़ का खेल**
- खेल द्वारा शिक्षण विधि के अंतर्गत माध्यमिक कक्षाओं हेतु उपयोगी विधि है— **वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ**
- किस शिक्षण विधि में कल्पना शक्ति का विकास करने वाले मनोरंजक खेलों को स्थान दिया गया है— **बालोद्यान पद्धति**
- किस विधि द्वारा भाषा शिक्षण के उद्देश्य, अर्थग्रहण, अभिव्यक्ति तथा सृजन शक्ति तीनों साथ-साथ पूरे होते हैं— **किंडरगार्टन पद्धति**
- भाषा शिक्षण की प्रायः किन नवीन पद्धतियों द्वारा बातों पर विशेष बल दिया गया है— **क्रियाशीलता, बालक की रुचि, बालक की स्वतंत्रता**
- हिन्दी शिक्षण की दृष्टि से कौन-सी पद्धति छोटी कक्षाओं की अपेक्षा बड़ी कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी है— **प्रोजेक्ट पद्धति**
- गद्य शिक्षण की विधि है— **अर्थ-बोध विधि**
- शब्दार्थ विधि का विकसित रूप है— **व्याख्या विधि**

- किस विधि के द्वारा पढ़ाने पर पद्य के गुण-दोषों की आलोचना करनी पड़ती है— **समीक्षा विधि**
- प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण के अन्तर्गत बातचीत एक महत्वपूर्ण उपकरण है, क्योंकि— **यह सीखने और सीखी हुई बातों को सुदृढ़ बनाने का एक आधारभूत माध्यम है**
- प्राथमिक स्तर पर एक अध्यापिका 'संज्ञा' पढ़ाते समय पहले 'संज्ञा' की परिभाषा बताती है। उसके बाद उससे सम्बन्धित उदाहरण समझाती है। अध्यापिका व्याकरण शिक्षण की कौन-सी विधि अपनाती है— **निगमन विधि**
- भाषा-कक्षाओं में प्रदर्शित सामग्री केवल तब सजावटी हो जाती है जब— **बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाने में उसका उपयोग नहीं होता**
- कविता-शिक्षण में कौन-सा तत्व उसे गद्य से अलग करता है— **गेयता**
- प्राथमिक स्तर पर आप कहानियों, कविताओं में किस पक्ष को सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण मानते हैं— **घटनाओं, शहरों, पदों में दोहराव**
- कहानियाँ बच्चों के भाषा-विकास में किस प्रकार सहायक हैं— **ये बच्चों की कल्पनाशक्ति, सृजनात्मकता और चिंतन को बढ़ावा देती है**
- आगमन विधि से हम बढ़ते हैं— **उदाहरणों से नियम की ओर**
- व्याकरण शिक्षण के संदर्भ में आपका बल किस बिन्दु पर होगा— **व्याकरण के व्यावहारिक पक्ष पर**
- कक्षा छः के बच्चों के लिए कहानी, कविताओं आदि किताबों का चयन करते समय आप किस बात का विशेष रूप से ध्यान रखेंगे— **किताबें बच्चों की मनोवैज्ञानिक और भाषिक जरूरतों के अनुरूप हों**
- भाषा सीखने में तब अधिक आसानी होती है जब— **जब शिक्षक कहानी सुनाते हैं**
- व्याकरण शिक्षण की अपेक्षाकृत बेहतर विधि है— **आगमन विधि**
- उच्च प्राथमिक स्तर पर व्याकरण-शिक्षण का सर्वाधिक प्रभावी तरीका है— **पढ़ाए जा रहे पाठ के संदर्भ में आए किसी व्याकरणिक बिन्दु को स्पष्ट करना**
- भाषा-शिक्षण की किस विधि में लक्ष्य भाषा सिखाते समय मातृभाषा का प्रयोग नहीं किया जाता— **प्रत्यक्ष विधि**
- बच्चों को समृद्ध भाषिक परिवेश उपलब्ध कराने में कौन सहजता से योगदान दे सकता/सकती है— **स्वयं शिक्षक का भाषा प्रयोग**
- व्याकरण के पक्षों और शब्दों की बारीकी की समझ का आकलन— **संदर्भयुक्त सामग्री में किया जाना चाहिए**



- कविता-शिक्षण में आप सर्वाधिक महत्व किसे देंगे—
कविता का भावपूर्ण पठन और रसानुभूति
- भाषा तब सबसे सहज और प्रभावी रूप से सीखी जाती है जब—
भाषा-प्रयोग की दक्षता प्रमुख उद्देश्य हो
- मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग करना—
भाषिक अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाता है
- भाषा की पाठ्यपुस्तक में लोकगीतों को स्थान देना—
भारत की सांस्कृतिक विशेषताओं से परिचित होने में मदद करता है
- 'नाटक शिक्षण' में सतत् और व्यापक मूल्यांकन के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—
पढ़े गए नाटक का मंचन

35. मूल्यांकन एवं उपचारात्मक शिक्षण

- उपचारात्मक शिक्षण की प्रक्रिया कब तक चलती रहनी चाहिए—
जब तक छात्रों का पिछड़ापन दूर न हो
- उपचारात्मक शिक्षण की आवश्यकता होती है—
कक्षा स्तर के अनुकूल प्रगति न करने वाले बालकों के लिए
- उपचारात्मक शिक्षण का उद्देश्य है—
छात्रों को पिछड़ापन दूर करना
- नैदानिक परख पत्र बनाने की आवश्यकता है—
छात्रों की कमजोरी का पता लगाने के लिए
- भाषा के आकलन में किस पर सर्वाधिक बल दिया जाना चाहिए—
विभिन्न संदर्भों में भाषा प्रयोग की कुशलता
- बालकों की भाषा संबंधी क्रमिक प्रगतियों का लेखा-जोखा रखना कहलाता है—
पोर्टफोलियो
- प्राथमिक कक्षाओं में रोल-प्ले का उद्देश्य होना चाहिए—
बालकों को भाषा प्रयोग के अवसर प्रदान करना
- भाषा के संदर्भ में सतत् और व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य है—
मौखिक एवं लिखित रूपों के प्रयोग की क्षमता का आकलन
- बालकों की मौखिक भाषा के सतत् आकलन का सबसे बेहतर तरीका है—
विभिन्न संदर्भों में बातचीत
- प्राथमिक स्तर पर भाषा आकलन का सर्वाधिक उचित तरीका है—
चित्र वर्णन
- सतत् और व्यापक आकलन करते समय आप किसे सर्वोपरि मानते हैं—
बालकों द्वारा विभिन्न संदर्भों में भाषा प्रयोग की क्षमता

- प्राथमिक स्तर पर पठन क्षमता का आकलन करने के लिए किस प्रकार की सामग्री सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—
कहानी
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषायी क्षमताओं के आकलन में सबसे अधिक कारगर है—
पोर्टफोलियो
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों की भाषा प्रयोग की क्षमता संबंधी रिकॉर्ड तैयार करने के उपरांत कौन-सा कार्य सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—
रिपोर्टिंग करना
- हिन्दी भाषा में सतत् आकलन का सर्वाधिक उचित तरीका है—
बच्चों को अपने अनुभवों को कहने-लिखने के पर्याप्त अवसर देना
- किस प्रकार का प्रश्न प्राथमिक बच्चों की भाषायी क्षमता का आकलन करने में सर्वाधिक सक्षम है—
किसी दृश्य का वर्णन कीजिए
- भाषा-आकलन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है—
भाषिक संरचनाओं पर आधारित प्रश्न
- बच्चों के भाषा-विकास की क्रमिक प्रगति का रिकॉर्ड रखने में सर्वाधिक सहायक है—
पोर्टफोलियो
- भाषा का पोर्टफोलियो हो सकता है—
प्रश्नों का संगठित और क्रमबद्ध संग्रह
- आकलन एक सतत् प्रक्रिया है। इसका प्राथमिक उद्देश्य है—
प्रविधि, पाठ्यपुस्तक, शिक्षक और विद्यार्थी में सुधार का अवलोकन
- हिन्दी भाषा में सतत् और व्यापक आकलन का मुख्य उद्देश्य है—
बच्चों की भाषा-प्रयोग संबंधी क्षमता के विकास में मदद करना
- भाषा में सतत् आकलन का उद्देश्य है— यह जानना कि भाषा सीखने में बच्चों को किस प्रकार की मदद की जरूरत है
- रचनात्मक आकलन का सबसे सही तरीका है—
कहानी पढ़कर प्रश्न बनाओ
- भाषा में आकलन सम्भव है—
सीखने-सिखाने की प्रक्रिया के दौरान अवलोकन द्वारा
- भाषा में आकलन करते समय आप किसे सबसे कम महत्व देंगे—
परिचर्चा
- हिन्दी भाषा में सतत् और व्यापक मूल्यांकन करते समय आप किस बात पर विशेष ध्यान देंगे—
विभिन्न संदर्भों में भाषा-प्रयोग की कुशलता

36. भाषायी कौशल और भाषायी विकार

- भाषा के अंग हैं- **लेखन, वाचन, पठन**
- भाषा सीखने का स्वाभाविक मनोवैज्ञानिक क्रम है-
सुनना-बोलना, पढ़ना-लिखना
- वर्णमाला पढ़ना और वर्णमाला लिखना कौन-सा कार्य पहले कराया जाता है- **वर्णमाला पढ़ना**
- गहन अध्ययन-निष्ठ शिक्षण में मौनवाचन किस शिक्षा से प्रारम्भ किया जाना उचित होगा- **कक्षा 5 से**
- श्रवण कौशल का सम्बन्ध किस भाषा से है- **मौखिक भाषा से**
- लेखन कौशल का मूल्यांकन करने के लिए सर्वोत्तम विधि हो सकती है- **अपने अनुभवों को लिखना**
- वाचन कौशल में सबसे अधिक महत्वपूर्ण है-
संदर्भानुसार अर्थ ग्रहण
- सस्वर वाचन का मुख्य उद्देश्य है-
पढ़ने संबंधी झिझक को दूर करना
- 'पढ़ना' कौशल में सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण है-
अर्थ एवं अनुमान
- प्राथमिक स्तर पर आधारभूत कौशल है- **सुनना और बोलना**
- बच्चों की श्रवण योग्यता का विकास करने में सर्वाधिक सहायक है- **परस्पर बातचीत**
- बच्चों की लेखन क्षमता के आकलन में सबसे कम महत्वपूर्ण है- **मानक वर्तनी**
- अमित पढ़ते समय कठिनाई का अनुभव करता है। वह ग्रस्त है- **डिस्लेक्सिया**
- लिखना- **एक तरह की बातचीत है**
- भाषा सीखने में बातचीत का इस रूप में सर्वाधिक महत्व है कि- **बच्चे विभिन्न उद्देश्यों के लिए भाषा का प्रयोग करना सीखते हैं**
- हिन्दी भाषा की कक्षा में मोना लिखते समय कठिनाई का अनुभव करती है। यह समस्या किससे सम्बन्धित है- **डिस्ग्राफिया**
- मौखिक कुशलता में शामिल है- **विभिन्न प्रकार की औपचारिक-अनौपचारिक चर्चाओं में बेझिझक बोलने की कुशलता**
- भाषा के कौशल हैं- **सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना**

- सुनना कौशल में शामिल है- **दूसरों की बात सुनने में रुचि, धैर्य और प्रतिक्रिया**
- बच्चों में पठन-संस्कृति का विकास करने के लिए अनिवार्य है- **बाल साहित्य पठन हेतु प्रेरणा**
- प्राथमिक स्तर पर भाषिक रेखांकन और चित्रांकन है- **लेखन अभ्यास का एक महत्वपूर्ण चरण है**
- शब्दों के अर्थ स्पष्ट करने की सर्वश्रेष्ठ पद्धति है- **वाक्य-प्रयोग द्वारा बच्चों को अर्थ का अनुमान लगाने का अवसर देना**
- अर्थ की गहनता को समझने में सर्वाधिक रूप से सहायक पद्धति है- **मौन पठन**
- सुनने और बोलने के कौशलों के विकास में सहायक है- **परस्पर बातचीत**
- भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में अर्थ गढ़ने का आधार मुख्यतः है- **समाज-सांस्कृतिक परिवेश**
- सुहेल को पढ़ने में कठिनाई होती है, लेकिन उसका अवबोधन-पक्ष बेहतर है। सुहेल की समस्या है- **डिस्लेक्सिया**
- लेखन-कुशलता का विकास करने में सबसे कम महत्वपूर्ण है- **प्रतिलिपि (नकल लिखना)**
- ग्राह्यात्मक कौशलों में शामिल है- **सुनना, पढ़ना**
- प्राथमिक स्तर 'सुनना-बोलना' कौशल के विकास में कौन-सी विधियाँ अधिक सहायक है- **भूमिका निर्वाह और बातचीत करना**
- बच्चों में सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए सर्वश्रेष्ठ विधि है- **पढ़ी गई कहानी को संक्षेप में लिखना**
- भाषा के आधारभूत कौशलों में सर्वोपरि है- **सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना**
- मुहावरे, लोकोक्तियों का प्रयोग- **भाषिक अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाता है**
- पठन-कौशल से अभिप्राय है- **लिपि-चिह्नों की पहचान**
- लेखन को आकलन में शामिल करना उचित है- **सूचना-संदेश, डायरी, विज्ञापन**
- किस विधा के शिक्षण के समय आप मौन-पठन को महत्व देंगे- **निबन्ध**
- भाषा प्रयोग की कुशलता सम्भव है- **अधिक-से-अधिक भाषा प्रयोग से**
- बच्चों के लिखित कार्य के आकलन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है- **वर्तनी**



- बोलना कौशल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है— **शुद्ध उच्चारण**
- पढ़ना कौशल में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है— **अर्थग्रहण करना**
- पाठ्यवस्तु का भावपूर्ण पठन—
अर्थ को समझने में मदद करता है
- कौन-सी विधि का अनिवार्यतः सस्वर पठन किया जाना अपेक्षित है—
कविता, एकांकी, नाटक
- मौखिक अभिव्यक्ति के समय होने वाली त्रुटियों पर बार-बार टोकने से—
बच्चे अपनी त्रुटियों के कारण को समझ जाते हैं
- 'मौन पठन' में मुख्यतः—
गहन अर्थ को आत्मसात् करने का प्रयास किया जाता है
- 'बोलना-कौशल' के विकास के लिए सबसे अधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हो सकता है—
परस्पर वार्तालाप
- विशेष क्षमता वाले बच्चों की कक्षा में लेखन कौशल के अभ्यास के लिए महत्वपूर्ण है—
विचारों की मौलिकता

37. पाठ्यपुस्तक, बालसाहित्य एवं बहुभाषिकता

- पाठ्यपुस्तक भाषा शिक्षण में—
साधन है
- एक भाषा शिक्षक के रूप में किस बात को एक बहुसांस्कृतिक कक्षा में आप सर्वाधिक महत्व देंगे—
बालकों को भाषा प्रयोग के अधिकाधिक अवसर प्रदान करना
- गैर-हिन्दी भाषी बच्चे हिन्दी सीखने में कठिनाइयों का सामना करते हैं, क्योंकि—
हिन्दी और उनकी मातृभाषा की संरचना में अन्तर होता है
- बाल साहित्य का प्रयोग—
सौंदर्य बोध की क्षमता का विकास करता है
- भाषा की पाठ्यपुस्तक की भाषा शैली—
बालकों की समुदाय की भाषा से मिलती-जुलती होनी चाहिए
- प्राथमिक स्तर के लिए पाठ्य-पुस्तक का निर्माण करते समय किस पर विशेष ध्यान देंगे—
अधिक-से अधिक कहानियाँ शामिल हों
- एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग—
संज्ञानात्मक रूप से समृद्ध होने का संकेत है
- भाषा की पाठ्य-पुस्तक के लिए पाठों को चुनाव करते समय सबसे महत्वपूर्ण है—
संवेदना परक पाठ
- आपकी कक्षा के लिए कुछ विद्यार्थी 'सड़क' को 'सरक' बोलते हैं। इसका सबसे सम्भावित कारण है—
उनकी मातृभाषा का प्रभाव
- एक बहुभाषिक कक्षा में बच्चों की गृहभाषा के प्रयोग को—
सम्मान देना चाहिए

- प्राथमिक स्तर पर भाषा-शिक्षण में बाल साहित्य का प्रयोग किए जाने के पक्ष में सर्वाधिक ठोस तर्क है—
इनका प्रयोग बच्चों के भाषा-अनुभवों को विस्तृत करता है
- भाषा की पाठ्य-पुस्तक में सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है—
व्याकरणिक नियमों की सैद्धांतिक व्याख्या
- बच्चों को बाल-साहित्य उपलब्ध कराने से लाभ है—
बच्चों को विविधतापूर्ण भाषिक सामग्री पढ़ने के अवसर देना
- बहु सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाली कक्षा में भाषा-शिक्षक को चाहिए कि वह —
परस्पर बातचीत करने के अधिकाधिक अवसर दे
- पाठ्यपुस्तक भाषा शिक्षण में मुख्यतः सहायता करती है—
भाषा की विभिन्न छटाएं प्रस्तुत करने में
- समृद्ध बाल-साहित्य का सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य है—
भाषा संरचना का विकास
- दो भाषा बोलने वाले बच्चे न केवल अन्य भाषाओं पर अच्छा नियंत्रण रखते हैं, बल्कि शैक्षिक स्तर पर वे—
अधिक अंक प्राप्त करते हैं
- हिन्दी भाषा की पाठ्यपुस्तक के माध्यम से—
भाषा के साथ-साथ सामाजिक विमर्श को भी बढ़ावा मिलता है
- उच्च प्राथमिक स्तर पर पाठ्यपुस्तकों को न केवल विषय-वस्तुओं के लिए स्थान उपलब्ध करवाना चाहिए बल्कि—
विविध भाषाओं के लिए भी स्थान उपलब्ध करवाना चाहिए
- बहुभाषिक कक्षा की आवश्यकताओं को संबोधित करने में सर्वाधिक सहायक है—
विविध स्वरूपी पाठ्य-सामग्री
- पॉल भाषा की कक्षा में अकसर बाल साहित्य पढ़ते हुए नजर आता है। इसका सम्भावित कारण है—
उसकी पढ़ने के प्रति ललक है
- हिन्दी भाषा की कक्षा में सबसे महत्वपूर्ण है—
बच्चों की भाषायी क्षमताओं में विश्वास
- उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में परिवार, पड़ोस, विद्यालय के साथ-साथ अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं—
संचार माध्यम
- भाषा की पाठ्यपुस्तक में ऐसे पाठ चुने जाएं, जो—
बच्चों के संवेदना-लोक के साथी बन सकें
- पूरक पाठ्यपुस्तक का उद्देश्य है—
वाचन अभ्यास
- बहुभाषिकता—
बच्चे की भाषायी अस्मिता का निर्माण करती है
- 'बहु-सांस्कृतिक' पृष्ठभूमि वाली भारतीय कक्षाओं में भाषा शिक्षण के लिए अत्यावश्यक है—
परस्पर बातचीत के लिए अनेक अवसरों का निर्माण

परीक्षोपयोगी महत्वपूर्ण प्रश्न

- पहले बच्चों के लिए लिपिबद्ध और उनसे जुड़ी ध्वनियाँ—
निरर्थक होती हैं
- “भाषा की कक्षा में बच्चे स्वाभाविक अभिव्यक्ति के लिए किसी भी प्रकार का रेखांकन कर सकते हैं” यह कथन— सही है,
क्योंकि रेखांकन भी अंततः भाषा की तरह
अभिव्यक्ति का साधन है
- भाषा की कक्षा में— शिक्षक द्वारा प्रयुक्त गतिविधियाँ
और युक्तियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं
- हिन्दी भाषा के अतिरिक्त कौन-सी भाषा देवनागरी लिपि में लिखी जाती है—
संस्कृत, नेपाली, मराठी
- हिन्दी भाषा शिक्षण का एक मुख्य उद्देश्य है—
प्रश्न पूछने, अपनी बात कहने का अवसर देना
- जब भाषा सीखने की प्रक्रिया बच्चे के दैनिक जीवन की जरूरतों से जुड़ी हो, तो—
बच्चों को विशुद्ध मनोरंजन की प्राप्ति होती है
- पाठ्य-पुस्तकों में दिये गये अभ्यास कैसे हों—
जो अनुमान और कल्पना पर आधारित हों
- प्रायः बच्चे/बच्चियाँ विद्यालय में स्वयं को अभिव्यक्त करने में संकोच करते हैं, क्योंकि— उन्हें अभिव्यक्ति का ज्ञान नहीं है
- भाषा शिक्षक के रूप में आप— बच्चों को अपने अनुभव
और विचार बताने के लिए उनमें उत्सुकता जगायेंगे
- बच्चे अपनी बोलचाल की भाषा का अनुभव—
समाज, परिवार से प्राप्त करते हैं
- हिन्दी भाषा में सतत और व्यापक आकलन का अन्तर यह जानना है कि—
बच्चे किस तरह की त्रुटियाँ करते हैं
- “बच्चों में भाषा सीखने की जन्मजात योग्यता होती है”—यह विचार है—
चाम्स्की का
- ‘बच्चे अपने समाज-सांस्कृतिक परिवेश से अर्थ ग्रहण करते हैं’ यह विचार है—
वाइगोत्स्की
- प्रिंट/मुद्रित अथवा लिखित भाषित परिवेश—
भाषा सीखने में सहायक है
- व्याकरण शिक्षण की आगमन विधि में—
उदाहरण से नियम की ओर जाते हैं
- भाषा के आधारभूत कौशल— विद्यालय में ही सीखे जाते हैं
- हिन्दी भाषा सीखने में पाठ्य पुस्तक—
साधन है
- भाषाई विविधता— बहुभाषिक बच्चों की संज्ञानात्मक
विकास की ओर संकेत करती है
- मौन पठन का मुख्य उद्देश्य है—
गहन अर्थ ग्रहण करना
- उच्च प्राथमिक स्तर पर भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य है
साहित्यिक विधाओं से परिचय और
व्याकरणिक नियम सिखाना
- मानव और पशुओं की भाषा सीखने की क्षमता के अध्ययन सम्बन्धी प्रयोग हुए अधिकतर—
चिम्पेंजी और वानरों पर
- बच्चों के सीखने की प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका होगी—
बच्चे द्वारा भाषायी प्रयोग के नियम पकड़ना
- बच्चों में भाषा सीखने की क्षमता एवं समझ विकसित हो, इसके लिए आवश्यक है कि—
जिस भाषायी शैली में वक्ता व
बच्चा सहज हो, उसी का प्रयोग करना चाहिये
- भाषायी ज्ञान का मूल्यांकन होता है—
लिखित एवं मौखिक दोनों परीक्षा के माध्यम से
- ‘भाषिक सापेक्षता’ के सम्बन्ध में प्रचलित व्याख्या की दृष्टि से सही है—
भाषा का विचारों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है
- “लिखित भाषा में अक्षर ध्वनियों के दृश्य प्रतीक होते हैं। सामान्यतः आकृतियों व ध्वनियों का सम्बन्ध सुस्थिर तथा सार्वभौम होता है।”—
पूर्णतया सत्य है
- इन्सान और जानवर की भाषा में फर्क है—
इन्सानों की भाषा को सांकेतिक ध्वनि चिह्नों (संकेतों) के माध्यम से निर्धारित किया गया है, जबकि जानवरों की भाषा को नहीं
- एक से अधिक भाषाओं का प्रयोग—
कक्षायी जटिलताओं को बढ़ाता है
- दृष्टिबाधित बच्चों की भाषा सिखाने समय—
अधिक-से-अधिक मौखिक भाषा का प्रयोग करना चाहिये
- प्राथमिक स्तर पर भाषा की पाठ्य-पुस्तकों में किस तरह की रचनाओं को स्थान दिया जाना चाहिये—
ऐसी रचनाएँ जो बच्चों के परिवेश से जुड़ी हों और जिनमें भाषा की अलग-अलग छटाएँ हों